शिमला से प्रकाशित

सरोकारी पत्रकारिता के लिए समर्पित

शैल

निष्पक्ष एवं निर्भीक साप्ताहिक समाचार

प्रकाशन का 49 वां वर्ष

ई-पेपर

www.facebook.com/shailsamachar

प्रदेश का पहला ऑनलाईन साप्ताहिक

वर्ष 49 अंक-53 पंजीकरण आरएनआई 26040/74 डाक पजींकरण एच. पी./93 /एस एम एल Valid upto 31-12-2026 सोमवार 23-30 दिसम्बर 2024 मूल्य पांच रूपये

दो वर्ष के बाद मुख्यमंत्री सुक्खू उनकी सरकार और कांग्रेस पार्टी कहां खड़े है?

शिमला/शैल। दो वर्ष के कार्यकाल के बाद मुख्यमंत्री सुखविंदर सिंह सुक्खू स्वयं उनकी सरकार और कांग्रेस पार्टी कहां खड़े हैं यह सवाल प्रदेश के जनमानस में चर्चा का विषय बन गये हैं। क्योंकि कांग्रेस ने सत्ता में आने के लिये विधानसभा चुनाव में जनता को दस गारंटीयां दी थी। मुख्यमंत्री के मुताबिक बहुत सी गारंटीयों पर अमल हो चुका है और कुछ पर अब अमल के आदेश कर दिये गये हैं। मुख्यमंत्री और उनकी सरकार के इन दावों का व्यवहारिक सच जनता जानती है जो इससे प्रत्यक्षत: प्रभावित हो रही है। इसलिये गारंटीयों की व्यवहारिकता पर कुछ भी कहना ज्यादा संगत नहीं होगा। अभी सरकार ने दो वर्ष पूरे होने पर एक कार्यक्रम का आयोजन किया। इस आयोजन के बाद विधानसभा का चार दिवसीय शीत सत्र धर्मशाला के तपोवन में हुआ। इस सत्र में जो विधेयक सरकार लायी और पारित किये यदि उन पर ही निष्पक्ष नजर डाली जाये तो सरकार का सारा व्यवहारिक पक्ष खुलकर सामने आ जाता है।

एक विधेयक लाकर राधा स्वामी सत्संग ब्यास को भोटा स्थित जमीन अपनी सहयोगी संस्था के नाम ट्रांसफर करने का मार्ग पर प्रशस्त करने के लिए टेनेंसी और भू-सुधार अधिनियम में संशोधन कर दिया गया। राधा स्वामी सत्संग ब्यास ने यह ट्रांसफर की सुविधा इसलिये मांगी थी कि उन्हें अढ़ाई करोड़ का जीएसटी देने से छूट मिल जाये। वित्तीय संकट से जूझती सरकार ने नौ सौ सत्संग घरों और हजारों अनुयायियों के वोट बैंक को सामने रखते हुये संशोधन को अंजाम दे दिया। अब यह संशोधन राष्ट्रपति की स्वीकृति के लिये जायेगा तब दिल्ली में यह सामने आयेगा की अढ़ाई करोड़ का वार्षिक नुकसान झेलते हुये यह संशोधन किया गया है। मुख्यमंत्री ने इसी शीतकालीन सत्र में भ्रष्टाचार के खिलाफ एक कड़ा विधेयक लाने का आश्वासन दिया है। लेकिन इसी आश्वासन के साथ भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम में संशोधन करते हुये भ्रष्टाचार के किसी भी मामले में सरकार के कर्मचारियों/अधिकारियों की गिरफ्तारी पर सरकार की अनुमति के बिना रोक लगा दी है। पहले यह अनुमति अदालत में चार्जशीट दायर के लिये वांछित होती थी। अब मामले की जांच के दौरान ही गिरफ्तारी की संभावना पर ही यह राइडर लगा दिया गया है। यह संशोधन भी स्वीकृति के लिये राष्ट्रपति के पास जायेगा। इस संशोधन से सरकार के भ्रष्टाचार के खिलाफ दावों का सच सामने आ जाता है। इस सत्र में कर्मचारियों की नियुक्ति और सेवा शर्तो का विधेयक पारित किया गया है। यह विधेयक दिसम्बर 2003 से लागू माना जायेगा। इससे प्रदेश में कार्यरत करीब चालीस हजार अनुबन्ध कर्मचारी सीधे प्रभावित होंगे। इस अधिनियम को उच्च न्यायालय में चुनौती मिलने की पूरी संभावना है। पंजाब एवं हरियाणा उच्चतम न्यायालय पंजाब पुनर्गठन के बाद ही हरियाणा सरकार द्वारा लाये गये इसी तरह के कानून को निरस्त कर चुका है। संभव है कि राज्यपाल ही इस अधिनियम को अपने पास ही रोक ले। सर्वोच्च न्यायालय के फैसले को निष्प्रभावी बनाने के लिये पारित किये गये इस अधिनियम का प्रभाव कर्मचारियों और उनके अभिभावकों पर क्या पड़ेगा इसका अनुमान लगाया जा सकता है।

यह संशोधन और अधिनियम सरकार पारित कर चुकी है। इससे सरकार के सारे दावों का सच उजागर हो जाता है। सरकार ने संशाधन बनाने के नाम पर टैक्स लगाने और शुल्क बढ़ाने का कोई भी संभव साधन नहीं छोड़ा है। प्रदेश से बाहर अपनी छवि रखने के लिये और हाईकमान को प्रभावित करने के लिये सरकार ने करोड़ों रुपए प्रचार माध्यमों पर खर्च किये हैं। इससे हाईकमान तो प्रभावित हो सकती है लेकिन प्रदेश की भुक्तभोगी जनता नहीं। इस शीत सत्र में पारित किये गये इन संशोधनों से सरकार का सारा सच स्वत: ही सामने आ जाता है। फिर इसी वर्ष राज्यसभा चुनाव के दौरान जिस तरह से कांग्रेस के छ: विधायक

शेष पृष्ठ 8 पर.....

डॉ.मनमोहन सिंह "Philosopher King" दर्शन की प्रति मूर्ति थे

शिमला/शैल। पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर हर आंख नम है। हर जहन में यह सवाल है कि क्या ऐसा व्यक्तित्व देश का मार्गदर्शन करने के लिये दूसरी बार मिलेगा। डॉ. मनमोहन सिंह ने विश्वविद्यालय के प्राध्यापक से जीवन यात्रा शुरू की

जिसका अंत देश के प्रधानमंत्री के रूप में हुआ। डॉ. मनमोहन सिंह एक अर्थशास्त्री थे। उन्होंने ''**भारत के निर्यात रुझान और आत्मनिर्भर विकास की संभावनाएं**'' विषय पर शोध किया और विश्वविद्यालय प्राध्यापक से जीवन यात्रा शुरू करके योजना आयोग के उपाध्यक्ष, रिजर्व बैंक के गवर्नर फिर वित्त मंत्री और अन्त में देश के प्रधानमंत्री तक पहुंचे। केम्ब्रिज विश्वविद्यालय में उनके नाम की चेयर स्थापित है। शैक्षणिक जगत में यह एक बहुत बड़ा सम्मान है। जितना ज्ञान और अनुभव आर्थिक मोर्चे पर डॉ. मनमोहन सिंह के पास था उसी का परिणाम था कि उन्होंने आर्थिक उदारीकरण की ओर देश की अर्थव्यवस्था का रूख मोड़ा। इसी अनुभव का परिणाम है कि उनके कार्यकाल में देश को आधार योजना मिली। उनके ही कार्यकाल में मनरेगा, सूचना का अधिकार, शिक्षा का अधिकार और भोजन का अधिकार मिला। इन अधिकारों ने सही मायने में आम आदमी को व्यवहारिक रूप से संवैधानिक मजबूती प्रदान की। आज इन अधिकारों के माध्यम से एक आम आदमी किसी भी व्यवस्था को चुनौती दे सकता है। आर्थिक उदारीकरण के जनक कहे जाने वाले डॉ. मनमोहन सिंह ने देश के आम आदमी को केंद्र में रखकर अपनी नीतियों को अंजाम दिया। डॉ. मनमोहन सिंह ने ग्यारह दलों के गठजोड़ की सरकार को सफलतापूर्वक चलाया और लगातार दूसरी बार सत्ता में आये। गठबंधन की सरकार में न्यूक्लियर डील का सूत्रधार बनना एक बड़ी उपलब्धि है। इस गठबंधन में कांग्रेस सबसे बड़ा दल था यदि कांग्रेस का खुला हाथ डॉ. साहब को न मिलता तो क्या वह इतने अधिकार आम आदमी को दे पाते। शायद नहीं। जो लोग डॉ. साहब को सोनिया गांधी की कठपुतली प्रचारित करते रहे हैं उनके लिए आम आदमी को मिले यह अधिकार अपने में ही एक पूरा जवाब हो जाते हैं। देश को इतना कुछ देने के बाद भी उसका कोई श्रेय नहीं लेना, कोई बखान नहीं करना डॉ. साहब को इतना बड़ा बना देता है कि उसे शब्दों में समेटना आसान नहीं है। जिस पंजाब विश्वविद्यालय से पढ़ाई शुरू की उसको 3500 किताबों की भेंट देने वाले डॉ. मनमोहन सिंह कितने बड़े शिक्षा विद थे इसका अन्दाजा लगाया जा सकता है। डॉ. मनमोहन सिंह प्लैटो के "Philosopher King" दर्शन की व्यवहारिक प्रतिमूर्ति थे। मेरा शैल परिवार के साथ उनके श्री चरणों में सादर नमन।

न्यायमूर्ति गुरमीत सिंह संधावालिया ने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली

शिमला/शैल। न्यायमूर्ति गुरमीत सिंह संधावालिया ने राजभवन में आयोजित एक सादे लेकिन गरिमापूर्ण समारोह में हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने उन्हें पद की शपथ दिलाई। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू भी उपस्थित थे।

मुख्य सचिव प्रबोध सक्सेना ने समारोह की औपचारिक कार्यवाही का संचालन करते हुए भारत के राष्ट्रपति द्वारा जारी नियुक्ति पत्र पढ़ा।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश विधानसभा अध्यक्ष कुलदीप सिंह पठानिया, उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, पंजाब और हरियाणा उच्च न्यायालय के न्यायाधीश, हिमाचल प्रदेश पर्यटन विकास निगम के अध्यक्ष आर.एस.बाली, मुख्यमंत्री के राजनीतिक सलाहकार सुनील शर्मा, मुख्यमंत्री के प्रधान मीडिया सलाहकार नरेश चौहान, महाधिवक्ता अनूप कुमार रतन, हिमाचल प्रदेश राज्य मानवाधिकार आयोग के अध्यक्ष न्यायमूर्ति पी.एस. राणा, लोकायुक्त न्यायमूर्ति चंद्र भूषण बारोवालिया, विभिन्न बोर्डों एवं निगमों के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, राज्य सरकार के वरिष्ठ अधिकारी, हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के परिवार के सदस्य तथा अन्य गणमान्य व्यक्ति भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती पर पुष्पांजलि अर्पित की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर पर शिमला में रिज स्थित उनकी प्रतिमा पर माल्यार्पण कर उन्हें पुष्पांजलि अर्पित की।

मुख्यमंत्री ने देश के लिए अटल बिहारी वाजपेयी के योगदान की सराहना की और उन्हें एक असाधारण राजनेता, एक उत्कृष्ट सांसद और एक प्रतिभाशाली कवि बताया। उन्होंने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी का हिमाचल प्रदेश और यहां के लोगों के प्रति गहरा लगाव था।

राज्यपाल ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की श्रद्धांजलि अर्पित की

शिमला/शैल। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने ऐतिहासिक रिज मैदान पर पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 100वीं जयंती के अवसर उनकी प्रतिमा पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि अटल बिहारी वाजपेयी महान राजनीतिज्ञ थे। वह सदैव देश की एकता व अखंडता के लिए समर्पित रहे। राष्ट्र निर्माण में उनका योगदान अद्वितीय रहा है और उन्हें भारतीय राजनीति के सबसे महान नेता के रूप में स्मरण किया जाएगा। वह राजनीति के स्तम्भ होने के साथ ही एक महान कवि भी थे। वह अपने आदर्शों एवं व्यवहार के कारण लोगों के दिलों में बसते हैं।

शिव प्रताप शुक्ल ने कहा कि राष्ट्र के लिए उनके बहुमूल्य योगदान को लोग हमेशा याद रखेंगे। वह सुशासन के प्रणेता थे। इस अवसर पर राज्यपाल ने पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की जीवन यात्रा पर आधारित एक प्रदर्शनी का भी शुभारम्भ किया।

इस अवसर पर पूर्व मुख्यमंत्री एवं नेता प्रतिपक्ष जय राम ठाकुर, चौपाल विधानसभा क्षेत्र के विधायक बलबीर सिंह वर्मा, नगर निगम शिमला के महापौर सुरेन्द्र चौहान, पूर्व मंत्री सुरेश भारद्वाज, उपायुक्त अनुपम कश्यप, नगर निगम के आयुक्त भूपेन्द्र अत्री, वरिष्ठ अधिकारी एवं अन्य गणमान्य भी उपस्थित थे। इससे पूर्व, राज्यपाल ने राजभवन में अटल बिहारी वाजपेयी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

इस अवसर पर राज्यपाल के सचिव सी.पी. वर्मा एवं राजभवन के अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने किया पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया है। डॉ. मनमोहन सिंह ने नई दिल्ली के एम्स में अंतिम सांस ली। वह 92 वर्ष के थे।

अपने शोक सन्देश में मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह एक महान तथा दूरदर्शी नेता थे, उनका देहावसान राष्ट्र के लिए एक महान क्षति है। उन्होंने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में भारत ने विभिन्न क्षेत्रों में अभूतपूर्व प्रगति की। उनकी नीतियों और कार्यक्रमों के फलस्वरूप देश ने विश्वभर में एक नई पहचान बनाई।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल के दौरान देश में आर्थिक उदारीकरण की नीतियां लागू की गई, जिससे विदेशी निवेश को बढ़ावा मिला। उन्होंने अपने कार्यकाल के दौरान कई ऐतिहासिक निर्णय लिए, जिससे भारतीय समाज और अर्थव्यवस्था में सकारात्मक बदलाव आये।

उन्होंने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह के नेतृत्व में देश में महात्मा गांधी राष्ट्रीय ग्रामीण रोज़गार गारन्टी अधिनियम (मनरेगा) लागू किया गया। यह योजना गरीब और कमजोर वर्ग के लोगों को रोज़गार प्रदान करने के लिए ऐतिहासिक कदम साबित हुई। उनके कार्यकाल के दौरान सूचना का अधिकार अधिनियम पारित हुआ, जिससे सरकारी कामकाज प्रक्रिया में पारदर्शिता और जवाबदेही सुनिश्चित हुई। उनके कार्यकाल में अनेक महत्वपूर्ण कानून लागू किए गए, जिससे राष्ट्र की प्रगति का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मुख्यमंत्री ने कहा कि देश को एक अर्थशास्त्री, राजनेता व प्रधानमंत्री के रूप में दी गई सेवाओं और योगदान के लिए डॉ. मनमोहन सिंह को हमेशा याद किया जाएगा। मुख्यमंत्री ने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति और पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना की।

राज्यपाल ने पूर्व प्रधानमंत्री डा. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा दुःख व्यक्त किया है।

राज्यपाल ने अपने शोक सन्देश में कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह एक आदर्श राजनेता और महान अर्थशास्त्री थे। उनका सम्पूर्ण जीवन राष्ट्र की सेवा के लिए समर्पित रहा।

राज्यपाल ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह एक दूरदर्शी नेता थे। भारत के उदारीकरण सुधारों में उनके योगदान और समावेशी विकास के प्रति उनकी प्रतिबद्धता ने देश के इतिहास पर एक अमिट छाप छोड़ी है। उन्होंने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह को एक प्रतिबद्ध राजनेता के रूप में याद किया जाएगा, जिन्होंने अपना जीवन भारत की प्रगति और समृद्धि के लिए समर्पित कर दिया।

राज्यपाल ने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति और परिवार के सदस्यों को इस अपूरणीय क्षति को सहन करने की शक्ति प्रदान करने की प्रार्थना की।

उप-मुख्यमंत्री ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने भारत के पूर्व प्रधानमंत्री, वरिष्ठ कांग्रेस नेता व महान अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर गहरा शोक व्यक्त किया। वह कई दिनों से अस्वस्थ चल रहे थे जिसके चलते उन्हें गुरूवार को दिल्ली स्थित एम्स में भर्ती किया गया था जहां उनका 92 वर्ष की आयु में स्वर्गवास हुआ।

उप-मुख्यमंत्री ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह भारत में आर्थिक सुधारों के सूत्रधार थे। वह वर्ष 1991 से 1996 तक केन्द्र सरकार में वित्त मंत्री रहे तथा उनके द्वारा देश की आर्थिक नीति को नई दिशा प्रदान की गई।

डॉ. मनमोहन सिंह वर्ष 2004 से 2014 तक देश के प्रधानमंत्री रहे, जिस दौरान उनके द्वारा देश व जनहित में उठाए गए कदमों के फलस्वरूप भारत ने विकास के नए आयाम स्थापित किए और विश्व की शीर्ष अर्थव्यवस्थाओं में शामिल हुआ।

मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि डॉ. मनमोहन सिंह ने अपने राजनीतिक जीवन में सदैव उच्च आदर्शों का पालन किया, जिस कारण उनकी गिनती देश के प्रतिष्ठित नेताओं में होती है।

उप-मुख्यमंत्री ने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति और पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना की।

युवा संगम कार्यक्रम के तहत तेलंगाना से आए विद्यार्थियों ने राज्यपाल के साथ किया संवाद

शिमला/शैल। राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान हमीरपुर और तेलंगाना राज्य के विद्यार्थियों ने युवा संगम चरण-5 के तहत राजभवन में राज्यपाल शिव प्रताप शुक्ल के साथ बातचीत की। 'एक भारत श्रेष्ठ भारत' योजना के तहत युवा संगम कार्यक्रम का आयोजन किया गया है। इस अवसर पर विद्यार्थियों ने राज्यपाल के साथ अपने अनुभव भी साझा किए।

इस अवसर पर राज्यपाल ने कहा कि इस तरह के कार्यक्रम सांस्कृतिक जुड़ाव और संस्कृति के संवर्धन में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं और इससे युवाओं में एकता की भावना और मजबूत होती है। उन्होंने कहा कि दुनिया में भारत की पहचान विश्व गुरु के रूप में स्थापित है और विदेशी यात्रियों ने ज्ञान खोज में भारत की यात्रा की। उन्होंने यहां वेदों का अध्ययन किया और वे भारत की ज्ञान परंपरा से प्रभावित हुए। उन्होंने दुनिया को संदेश दिया कि वेदों का ज्ञान अर्जित कर भारत के बारे में विस्तार से जाना जा सकता है।

उन्होंने छात्रों से अपनी संस्कृति पर गर्व करने और उसे अपनाने पर बल दिया। उन्होंने कहा कि आज भारत दुनिया में अपनी एक अलग पहचान रखता है और विकसित देश भी हमारे नेतृत्व का सम्मान करते हैं।

इस अवसर पर हिमाचल प्रदेश विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सतप्रकाश बंसल ने भी अपने विचार व्यक्त किए तथा विद्यार्थियों को हिमाचल की समृद्ध सांस्कृतिक विरासत से अवगत कराया।

इससे पूर्व युवा संगम चरण-5 कार्यक्रम के नोडल अधिकारी डॉ. परम सिंह ने राज्यपाल का स्वागत किया तथा उन्हें सम्मानित किया।

शैल समाचार
संपादक मण्डल
संपादक- बलदेव शर्मा
सयुक्त संपादकः जे.पी.भारद्वाज
विधि सलाहकार: ऋचा शर्मा

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया

शिमला/शैल। स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल, कृषि मंत्री प्रो. चंद्र कुमार, उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, राजस्व मंत्री जगत सिंह नेगी, शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, पंचायती राज मंत्री अनिरुद्ध सिंह, लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह, नगर नियोजन मंत्री राजेश धर्माणी, आयुष मंत्री यादविंद्र गोमा और उप-मुख्य सचेतक केवल सिंह पठानिया ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

मुख्यमंत्री के राजनैतिक सलाहकार सुनील शर्मा, प्रधान सलाहकार मीडिया नरेश चौहान, प्रधान सलाहकार सूचना प्रौद्योगिकी एवं नवाचार गोकुल बुटेल ने पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह के निधन पर शोक व्यक्त किया है।

डॉ. मनमोहन सिंह के निधन पर प्रदेश के विभिन्न आयोग, निगमों एवं बोर्ड के अध्यक्ष एवं उपाध्यक्ष, विभिन्न पदाधिकारियों और गणमान्य व्यक्तियों ने शोक व्यक्त किया है। उन्होंने परमपिता परमात्मा से दिवंगत आत्मा की शांति और पुण्य आत्मा को अपने श्रीचरणों में स्थान देने की प्रार्थना की।

मुख्यमंत्री ने किया विंटर कार्निवाल शिमला का शुभारम्भ

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने रिज मैदान में विंटर कार्निवाल शिमला का शुभारम्भ किया। यह कार्निवाल 2 जनवरी, 2025 को सम्पन होगा।

इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार ने ही पहली बार शिमला और धर्मशाला में विंटर कार्निवाल की शुरूआत की है। उन्होंने कहा कि प्रदेश सरकार द्वारा मनाली में विंटर कार्निवाल बड़े पैमाने पर आयोजित किया जा रहा है। इस तरह के कार्निवाल और उत्सव राज्य की समृद्ध संस्कृति और परंपराओं को प्रदर्शित करते हैं। वर्तमान प्रदेश सरकार राज्य में पर्यटन को प्रोत्साहित करने के लिए दृढ़ प्रयास कर रही है ताकि अधिक से अधिक पर्यटक प्रदेश के नैसर्गिक सौंदर्य की ओर आकर्षित हों और हिमाचल पर्यटन राज्य बन सके।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि सरकार ने 23 दिसंबर, 2024 से 5 जनवरी, 2025 तक रेस्तरां और अन्य खाद्य पदार्थों की दुकानों को चौबीसों घंटे खोलने के संबंध में अधिसूचना जारी की है ताकि पर्यटकों और आगंतुकों को राज्य में भ्रमण के दौरान किसी भी असुविधा का सामना न करना पड़े। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार पर्यटकों को सभी प्रकार की सहायता प्रदान करेगी। उन्होंने आगंतुकों से कार्निवाल और बर्फबारी का भरपूर आनंद लेने का आग्रह किया। उन्होंने सभी से डस्टबिन का उपयोग सुनिश्चित कर राज्य को पॉलीथिन मुक्त रखने की भी अपील की।

मुख्यमंत्री ने आशा व्यक्त की कि शिमला शहर सहित राज्य के पहाड़ी क्षेत्रों में क्रिसमस और नववर्ष के दौरान बर्फबारी का एक और दौर होगा, जो कि पर्यटकों के लिए आकर्षण का केंद्र होगा। उन्होंने उम्मीद व्यक्त की कि इस बार सर्दियों के मौसम में अच्छी बर्फबारी होगी, जो कि हमारे जल स्रोतों को रिचार्ज करने में काफी मददगार साबित होगी। उन्होंने विंटर कार्निवाल को शानदार तरीके से आयोजित करने के लिए नगर निगम और जिला प्रशासन शिमला को शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने महानाटी में भी भाग लिया और सांस्कृतिक परेड को हरी झंडी दिखाई, जिसमें 11 जिलों के प्रतिभागियों ने भाग लिया। इस अवसर पर उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, विधायक हरीश जनारथा, हिमुडा के उपाध्यक्ष यशवंत छाजटा, शिमला नगर निगम के महापौर सुरेन्द्र चौहान, उपायुक्त शिमला अनुपम कश्यप और अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

मुख्यमंत्री ने न्यायमूर्ति गुरमीत सिंह संधावालिया को मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ लेने पर दी बधाई

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने न्यायमूर्ति गुरमीत सिंह संधावालिया को हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ लेने पर हार्दिक बधाई दी है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि न्यायमूर्ति गुरमीत सिंह संधावालिया ने हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश के रूप में शपथ ली है। उन्होंने कहा कि मुझे पूर्ण विश्वास है कि उनका विस्तृत अनुभव और दृष्टिकोण हिमाचल प्रदेश को लाभान्वित करेगा और न्याय की भावना को और ऊंचाई प्रदान करेगा।

मुख्यमंत्री ने आशा व्यक्त की कि न्यायमूर्ति संधावालिया की न्यायिक सूझ-बूझ राज्य में न्याय के सिद्धांतों को कायम रखने में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

मुख्यमंत्री ने ऊर्जा विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की समीक्षा की

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने ऊर्जा विभाग द्वारा कार्यान्वित की जा रही विभिन्न परियोजनाओं की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार प्रदेश में अधिक से अधिक हरित ऊर्जा का दोहन करने के लिए तत्परता से कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि सोलन जिले के नालागढ़ में एक मेगावाट क्षमता की ग्रीन हाइड्रोजन परियोजना निर्माणाधीन है तथा ऊना जिले के पेखुबेला में 32 मेगावाट की सौर ऊर्जा परियोजना का निर्माण रिकॉर्ड छः माह में पूरा कर लिया गया है। ऊना जिले में दो और ऐसी परियोजनाएं निर्माणाधीन हैं, जिन्हें शीघ्र ही जनता को समर्पित किया जाएगा।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार स्थानीय युवाओं को स्वरोजगार तथा रोजगार के अवसर प्रदान करने के लिए प्रदेश में जल ऊर्जा पर्यटन को बढ़ावा देने पर विचार कर रही है। उन्होंने कहा कि इस संबंध में नीति तैयार की जाएगी तथा ऊर्जा विभाग के माध्यम से विद्युत परियोजना डेवलपर्स को प्रशिक्षण दिया जाएगा।

मुख्यमंत्री ने राज्य के हित में निर्माणाधीन विद्युत परियोजनाओं में तेजी लाने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य की जल विद्युत उत्पादन क्षमता का दोहन करने के लिए गैर उत्तरदायी जल विद्युत परियोजनाओं को पुनः विज्ञापित किया जाएगा। उन्होंने हिमाचल प्रदेश राज्य विद्युत बोर्ड लिमिटेड को देवी कोठी तथा हेल पावर परियोजनाओं का निर्माण कार्य शीघ्र शुरू करने के निर्देश दिए। उन्होंने न्यायालयों में लंबित जेएसडब्ल्यू, शानन तथा बीबीएमबी के लंबित बकाए जैसे उच्च स्तरीय मामलों की भी समीक्षा की तथा संबंधित अधिकारियों को इन मामलों को दक्षता से आगे बढ़ाने के निर्देश दिए। उन्होंने पंप भंडारण परियोजनाओं के कार्य में भी तेजी लाने के निर्देश दिए।

बैठक में उद्योग मंत्री हर्षवर्धन चौहान, मुख्यमंत्री के प्रधान सलाहकार राम सुभग सिंह, मुख्यमंत्री के सचिव राकेश कंवर, एचपीएसईबीएल के एमडी संदीप कुमार, ऊर्जा विभाग के निदेशक राकेश प्रजापति, हिमाचल प्रदेश पावर कॉरपोरेशन लिमिटेड के प्रबंध निदेशक हरिकेश मीणा, एचपीपीटीसीएल के प्रबंध निदेशक राजीव सूद तथा अन्य वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे।

6 राजीव गांधी डे बोर्डिंग स्कूलों का निर्माण कार्य शुरूः मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। राज्य सरकार शिक्षा के क्षेत्र में गुणात्मक सुधार लाने के लिए अनेक महत्त्वपूर्ण कदम उठा रही है। चरणबद्ध तरीके से राजीव गांधी डे बोर्डिंग स्कूलों का निर्माण किया जा रहा है, जिसमें प्रत्येक स्कूल में प्री-प्राइमरी से कक्षा 12 तक कम से कम 1,000 छात्रों को समायोजित करने की क्षमता होगी। कांगड़ा जिले के नगरोटा बगवां, ज्वालामुखी, फतेहपुर, पालमपुर और जयसिंहपुर विधानसभा क्षेत्रों के साथ-साथ हमीरपुर जिले के भोरंज विधानसभा क्षेत्र में पहले से ही ऐसे छः स्कूलों का निर्माण कार्य शुरू हो चुका है। इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार ने 10 स्थानों पर स्थापित किए जाने वाले इन स्कूलों के लिए वास्तुशिल्प योजनाओं को स्वीकृति प्रदान कर दी है।

मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राजीव गांधी डे बोर्डिंग स्कूलों को आधुनिक सुविधाओं जैसे हाईटेक स्मार्ट क्लासरूम, खेल मैदान, इंडोर स्टेडियम और स्विमिंग पूल आदि से सुसज्जित किया जाएगा। ये सरकारी स्कूल शिक्षण संस्थानों के मानकों में उल्लेखनीय सुधार लाएंगे और ग्रामीण क्षेत्र के छात्रों में जीवन की चुनौतियों को प्रभावी ढंग से सामना करने का आत्मविश्वास पैदा करेंगे।

इसके अतिरिक्त, राज्य सरकार ने सरकारी स्कूलों और कॉलेजों में शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए 100 उच्च विद्यालय, 200 वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, 48 कॉलेज और दो संस्कृत कॉलेजों को उत्कृष्टता केंद्र के रूप में अधिसूचित किया है।

मुख्यमंत्री ने बच्चों को नशे से दूर रखने के लिए खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने के सरकार के प्रयासों पर भी बल दिया। राज्य सरकार ने खेल प्रतियोगिताओं में भाग लेने वाले छात्रों के लिए डाइट मनी में वृद्धि की है। जोनल और जिला स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए डाइट मनी की राशि 120 से बढ़ाकर 400 रुपये कर दी गई है, जबकि राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए इसे 250 से बढ़ाकर 500 रुपये कर दिया गया है। इसी प्रकार, राज्य के आठ खेल छात्रावासों में प्रशिक्षण प्राप्त करने वाले खिलाड़ियों के लिए डाइट मनी 240 से बढ़ाकर 400 रुपये कर दी गई है।

उन्होंने कहा कि आधुनिक सुविधाएं, शिक्षा तथा खेलों पर केंद्रित प्रयासों से राज्य भर के छात्रों के लिए समग्र शिक्षण वातावरण और अवसरों में उल्लेखनीय वृद्धि होगी।

अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम की 52वीं बैठक आयोजित

शिमला/शैल। हिमाचल प्रदेश अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम द्वारा राज्य के अल्पसंख्यकों व दिव्यांगजनों को स्वरोजगार स्थापित करने और विस्तार करने के लिए रियायती दरों पर ऋण प्रदान किया जाता है, जिसके लिए पारिवारिक आय सीमा को बढ़ाकर तीन लाख रुपये किया गया। पहले यह आय सीमा ग्रामीण क्षेत्रों में 98 हजार रुपये तथा शहरी क्षेत्रों में 1.20 लाख रुपये थी। यह निर्णय स्वास्थ्य, सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री डॉ. (कर्नल) धनी राम शांडिल की अध्यक्षता में आयोजित निगम की 52वीं निदेशक मंडल की बैठक में लिया गया।

बैठक की अध्यक्षता करते हुए सामाजिक न्याय एवं अधिकारिता मंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश में अल्पसंख्यकों एवं दिव्यांगों के सशक्तिकरण एवं उत्थान के लिए राज्य सरकार प्रभावी कदम उठा रही है। उन्होंने बताया कि अल्पसंख्यकों एवं दिव्यांगों के कल्याण के लिए एवं उनको स्वरोजगार के प्रति प्रोत्साहित करने के लिए राज्य सरकार उन्हें विभिन्न सुविधाएं प्रदान करती है। हिमाचल प्रदेश अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम के माध्यम से वित्त वर्ष 2023-24 के दौरान अल्पसंख्यकों को 1296.95 लाख रुपये का ऋण तथा दिव्यांगजनों को इसी अवधि में 540.83 लाख रुपये का ऋण निगम द्वारा रियायती ब्याज दर पर दिया गया है। उन्होंने कहा कि इस वित्त वर्ष में भी अधिक से अधिक लाभार्थियों को जोड़ने और उन्हें रियायती दर पर ऋण उपलब्ध करवाने के लिए लक्ष्य निर्धारित किया गया है। उन्होंने कहा कि निगम द्वारा इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए विशेष रूप से प्रयास किए जा रहे हैं।

निगम द्वारा छोटे व्यवसायों, परिवहन सेवाओं, दुकानों, पार्लर एवं कृषि आदि क्षेत्रों में व्यवसाय के लिए कम ब्याज दरों पर ऋण प्रदान किया जाता है। 18 से 55 वर्ष की आयु वर्ग के अल्पसंख्यकों को 20 लाख रुपये तक छः प्रतिशत और 20 से 30 लाख रुपये तक 7 प्रतिशत की ब्याज दर पर ऋण दिया जाता है। 16 वर्ष से अधिक आयु वर्ग के दिव्यांगों को पांच लाख रुपये तक 6 प्रतिशत, 10 लाख रुपये तक 7 प्रतिशत तथा 10 लाख रुपये से अधिक के ऋण पर 8 प्रतिशत की ब्याज दर पर ऋण दिया जाता है। दिव्यांग महिलाओं के लिए ब्याज दर पर 2 प्रतिशत अतिरिक्त छूट का प्रावधान है। इसके अतिरिक्त, प्रदेश के अल्पसंख्यकों और दिव्यांगों को व्यावसायिक शिक्षा ग्रहण करने के लिए तीन प्रतिशत की दर पर ऋण प्रदान किया जाता है।

डॉ. शांडिल ने बैठक के दौरान कहा कि प्रदेशभर में नियमित अंतराल में जागरूकता शिविरों का आयोजन कर प्रदेश के अल्पसंख्यकों एवं दिव्यांगजनों को हिमाचल प्रदेश अल्पसंख्यक वित्त एवं विकास निगम द्वारा उनके कल्याण के दृष्टिगत उठाए जा रहे कदमों से अवगत करवाया जाना चाहिए। जिन स्थानों में अल्पसंख्यक ज्यादा बसते हैं या फिर दिव्यांग अधिक है ऐसे स्थानों पर निगम द्वारा विशेष रूप से ध्यान केंद्रित किया जाना चाहिए ताकि अधिक से अधिक लाभार्थियों को जोड़ा जा सके।

बैठक में विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की गई और नई मांगों को स्वीकृति प्रदान की गई। इस अवसर पर सामाजिक न्याय एवं आधिकारिता विभाग के सचिव आशीष सिंहमार, निगम के प्रबन्ध निदेशक मनोज कुमार, निदेशक महिला एवं बाल विकास गंधर्वा राठौर और निगम के निदेशक मंडल के अन्य सदस्यों सहित वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

पीएमजीएसवाई चरण-4 के तहत पुरानी सड़कों की मेटलिंग की अनुमतिःविक्रमादित्य सिंह

शिमला/शैल। लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने बताया कि केन्द्र सरकार ने प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना चरण-4 में नई सड़कों के साथ पुरानी खराब सड़कों की मेटलिंग करने के प्रदेश के आग्रह को स्वीकार कर लिया है। लोक निर्माण मंत्री ने कहा कि प्रदेश ने केन्द्रीय ग्रामीण विकास मंत्री शिवराज सिंह चौहान से इसके दृष्टिगत विशेष आग्रह किया था।

उन्होंने आभार व्यक्त करते हुए कहा कि केन्द्र सरकार द्वारा प्रदेश में नई सड़कों के साथ पुरानी खराब सड़कों की मेटलिंग की अनुमति प्रदान करने से राज्य में लगभग 1000-1500 किलोमीटर सड़कों के मेटलिंग कार्य में मदद मिलेगी। उन्होंने कहा कि प्रदेश के ग्रामीण क्षेत्रों में सड़कों को सुदृढ़ करने में प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना चरण-4 के तहत विभिन्न प्रावधानों से उल्लेखनीय सहायता प्राप्त होगी।

विक्रमादित्य सिंह ने कहा कि प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों में बर्फबारी के कारण बाधित सड़कों में यातायात के सुचारू संचालन के लिए युद्धस्तर पर कार्य किया जा रहा है। विभाग द्वारा अधिकांश बाधित सड़कों को समयबद्ध खोला गया है। बर्फबारी से प्रभावित होने वाले चिन्हित क्षेत्रों में पर्याप्त संख्या में कार्यबल और मशीनरी तैनात की गई है। यह प्रयास किया जा रहा है कि पर्यटन सीजन के दौरान पर्यटकों के साथ-साथ स्थानीय लोगों को भी किसी असुविधा का सामना न करना पड़े।

हमेशा अपने विचारों को शुद्ध करने का लक्ष्य रखें और सब कुछ ठीक हो जायेगा।
..... महात्मा गांधी

सम्पादकीय

स्व.डॉ.मनमोहन सिंह के अन्तिम संस्कार पर उठा विवाद निन्दनीय है

पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मनमोहन सिंह का अन्तिम संस्कार कहां होगा उनका स्मारक बनेगा या नहीं। बनेगा तो कहां बनेगा? इन सवालों पर जिस तरह का अनचाहा वाद – विवाद उभरा है वह निन्दनीय है। लेकिन यह विवाद सामने आया है और उससे कई और सवाल खड़े हो गये हैं। दूरदर्शन राष्ट्रीय न्यूज़ चैनल और सरकार के नियंत्रण में है। दूरदर्शन ने स्व. प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की अन्तिम यात्रा और अन्तिम संस्कार का लाइव कवरेज करने के लिये जितना समय लगाया था उसके मुकाबले में स्व.डॉ. मनमोहन सिंह के लिये जितना समय दिया है उसी पर सवाल उठ गये हैं। जबकि दोनों ही दो – दो बार देश के प्रधानमंत्री रहे हैं। सरकारी चैनल में इस तरह का भेदभाव पाया जाना क्या सरकार की मंशा और चैनल की निष्पक्षता पर सवाल नहीं खड़े करता है? पूर्व प्रधानमंत्री के अन्तिम संस्कार के दौरान खास राजकीय प्रोटोकॉल का पालन किया जाता है। इसका मकसद देश के प्रति उनके योगदान और पद की गरिमा को सम्मानित करना होता है। पूर्व प्रधानमंत्रियों का अन्तिम संस्कार दिल्ली के विशेष स्मारकीय स्थलों पर किया जाता है जैसे जवाहर लाल नेहरू, इंदिरा गांधी और राजीव गांधी का अन्तिम संस्कार राजघाट परिसर में किया गया था। वहीं कई पूर्व प्रधानमंत्रीयों के लिये अलग से समाधि स्थान भी बनाया जाता है। अन्तिम संस्कार का तरीका दिवंगत व्यक्ति और उनके परिजनों के धार्मिक विश्वासों के अनुसार होता है। यह प्रोटोकॉल सरकार द्वारा तय है। 1997 में इसके नियमों में संशोधन करके राज्य सरकारों को भी राष्ट्रीय शोक घोषित करने का प्रावधान किया था।

राष्ट्रीय प्रोटोकॉल के तहत स्व.डॉ. मनमोहन सिंह का अन्तिम संस्कार कहां किया जायेगा यह केन्द्र सरकार को तय करके डॉ. मनमोहन सिंह के परिवार को सूचित करना था। लेकिन केन्द्र सरकार सुबह 11:30 बजे मंत्रिमण्डल की बैठक करने के बाद भी शाम तक इसकी सूचना नहीं दे सकी जबकि परिवार और कांग्रेस पार्टी द्वारा इसके लिये आग्रह किया गया था कि उनका संस्कार राजघाट पर किया जाये। लेकिन सरकार राजघाट पर जगह चिन्हित नहीं कर पायी। इस पर प्रियंका गांधी ने स्व.इंदिरा गांधी और स्व. राजीव गांधी के स्मारक स्थलों में जमीन चिन्हित करके स्व. डॉ. मनमोहन सिंह का अन्तिम संस्कार वहां करने और स्मारक बनाने की पेशकश कर दी। इसके बाद जो वाद – विवाद सामने आया उसमें यहां तक आरोप लगा की सरकार ने स्व. डॉ. मनमोहन सिंह का नीयतन अपमान करके एक नया मुद्दा खड़ा कर दिया है। स्व. डॉ. मनमोहन सिंह के देहान्त की खबर आने के बाद अन्तिम संस्कार तक बीच में जितना वक्त था उसमें केन्द्र सरकार सारे फैसले समय पर लेकर डॉ. साहब के परिवार और कांग्रेस पार्टी को सूचित कर सकती थी। जबकि प्रोटोकॉल के अनुसार यह केन्द्र को ही करना था। लेकिन केन्द्र सरकार ऐसा नहीं कर पायी। केन्द्र की यह चूक नीयतन हुई या अनचाहे ही हो गयी। इसका फैसला आने वाला समय करेगा। लेकिन स्व. डॉ मनमोहन सिंह जिस व्यक्तित्व के मालिक थे और देश के लिये जो योगदान उनका रहा है उसको सामने रखते हुये यदि केन्द्र का आचरण नीयतन रहा है तो यह सरकार पर भारी पड़ेगा।

जो लोग स्व. डॉ. मनमोहन सिंह के कार्यकाल में लगे भ्रष्टाचार के आरोपों और उस दौरान उठे अन्ना आन्दोलन की बात करते हैं उनको यह भी स्मरण रखना चाहिए कि उन्ही के कार्यकाल में केन्द्रीय मंत्रियों के खिलाफ कारवाई हुई। यह अब स्पष्ट रूप से सामने आ चुका है कि अन्ना आन्दोलन एक प्रायोजित कार्यक्रम था। डॉ.सिंह के ही कार्यकाल में कॉरपोरेट घरानों के खिलाफ कारवाई हुई। उन्होंने ही लोकपाल विधेयक लाया। लेकिन जिस लोकपाल के लिये अन्ना आन्दोलन हुआ उसके तहत कितने मामलों की जांच पिछले एक दशक में हुई वह अभी तक सामने नहीं आयी है। विनोद राय सी ए जी की जिस रिपोर्ट पर टू जी स्कैम का आरोप लगा और 1,76,000 करोड़ के घपले का आरोप लगा। उसकी जांच में विनोद राय ने यह खेद क्यों प्रकट किया कि उनको गणना में गलती लग गई थी। इन तथ्यों के परिदृश्य में यह स्पष्ट हो जाता है कि स्व. डॉ. मनमोहन सिंह की सरकार पर लगे आरोपों का सच क्या है। इसलिये आज उनके निधन के बाद उनके अपमान का मुद्दा कहीं कुछ बड़ा न हो जाये इसकी आशंका उभरने लगी है।

बेहद खतरनाक है सीरिया की असद सरकार की पराजय को इस्लामिक स्टेट की जीत से जोड़ कर प्रचारित करना

गौतम चौधरी

अभी हाल ही में सीरिया के बशर अल असद सरकार को अपदस्त कर एक नयी राजनीतिक व्यवस्था खड़ी की गयी है। सीरिया की इस हालिया घटनाक्रम को कट्टरपंथी सोंच वाले इस्लामिक स्टेट की जीत से जोड़ कर प्रचारित कर रहे हैं। यह प्रचार भ्रामक है और चिंताजनक भी है। सबसे चिंताजनक बात यह है कि कुछ कट्टरपंथियों ने तो इस घटना को न केवल इस्लामिक स्टेट (आईएसआईएस) से जोड़ा है अपितु इसे वे दैवीय जीत बता कर प्रचारित करने लगे हैं और इस घटना के बहाने दुनिया भर के इस्लामिक समाज में इस्लामिक स्टेट की स्वीकार्यता दिलाने की कोशिश में लग गए हैं। इस प्रचार अभियान का टारगेट एरिया मुस्लिम युवा है। इसलिए सतर्कता यहां बेहद जरूरी हो गयी है। यह वि त व्याख्या झूठी और खतरनाक है। खासकर युवा और भावुक दिमाग वालों के लिए।

बता दें कि मध्य पूर्व में कई अन्य लड़ाइयों की तरह, सीरियाई संघर्ष भी बहुआयामी है, जिसमें विभिन्न गुट नियंत्रण, प्रभाव और अस्तित्व के लिए प्रतिस्पर्धा कर रहे हैं। कुछ चरमपंथी समूह, जिनमें आईएसआईएस के अवशेष भी शामिल हैं, इन घटनाक्रमों को अपने तथाकथित 'खिलाफत' के हिस्से के रूप में पेश करने की कोशिश किया है। यह उनकी कट्टरपंथी विचारधारा की महज एक अवधारणा है। हालाँकि, यह कथा शासन, न्याय और इस्लामी राज्य की अवधारणा की सच्ची इस्लामी समझ से बहुत दूर है।

यह समझना महत्वपूर्ण है कि 'इस्लामिक स्टेट' शब्द केवल एक राजनीतिक नारा नहीं है। न ही इसे हिंसा, उग्रवाद या क्षेत्रीय विजय के माध्यम से हासिल किया जा सकता है। इस्लामिक शास्त्रों के जानकार बरेलवी फिरके से विद्वान मुफ्ती तुफैल खान साहब बताते, इस्लाम में इस्लामी राज्य की सच्ची अवधारणा वह है जो कुरान और पैगंबर मुहम्मद (पीबीयूएच) की सुन्नत के आधार पर न्याय, शांति और कानून के शासन को कायम रखती है। आईएसआईएस या ऐसे किसी भी समूह की कारवाइयां जो खिलाफत स्थापित करने का दावा करती हैं, उग्रवाद, हिंसा और इस्लामी शिक्षाओं की गलत व्याख्या पर आधारित है। तुफैल साहब आगे बताते हैं, आईएसआईएस के तहत तथाकथित 'इस्लामिक राज्य' विनाश, उत्पीड़न और आतंकवाद पर बनाया गया था। यह एक राजनीतिक इकाई थी जिसने इस्लाम के मूलभूत सिद्धांतों – जैसे न्याय, दया और मानवीय गरिमा के प्रति सम्मान का उल्लंघन किया। मुस्लिम उम्माह में शांति और समृद्धि लाने के बजाये, आईएसआईएस पीड़ा, रक्तपात और विभाजन लेकर आया। इस्लाम के नाम पर आतंकवाद, सांप्रदायिक हिंसा और क्रूरता की इसकी रणनीति ने न केवल इस्लामिक विश्वास को कमजोर किया है बल्कि दुनिया भर में कई मुसलमानों का अपनी सोच के प्रति मोहभंग भी किया है। कुछ कट्टरपंथी और चरमपंथी अब सीरिया में हुए घटनाक्रम को तथाकथित इस्लामिक स्टेट के मकसद की जीत के रूप में पेश करने की कोशिश कर रहे हैं।

उनका लक्ष्य भावनाओं को भड़काकर और खुद को इस्लाम के 'सच्चे' रक्षक के रूप में पेश करके मुस्लिम युवाओं को अपने खेमे में भर्ती करना है। वे एक विजयी ख़लीफ़ा के पुनर्जन्म की तस्वीर प्रस्तुत करने के लिए लड़ाई की छवियों, नारों और यहां तक कि 'जिहाद' के संदर्भ का भी उपयोग कर सकते हैं। हालाँकि, यह कथा इस गलत समझ पर आधारित है कि इस्लाम क्या सिखाता है और जिहाद की अवधारणा का वास्तव में क्या मतलब है।

इस्लामिक स्टेट वालों ने जिहाद की भी गलत अवधारणा प्रस्तुत की है। इस्लामिक धार्मिक किताबों के जानकारों का मत इससे बिल्कुल अलग है। इस्लामी परंपरा में जिहाद, मुख्य रूप से व्यक्तिगत सुधार और समाज में न्याय और धार्मिकता को बनाए रखने का प्रयास है। यह संवेदनहीन हिंसा या आतंकवाद के माध्यम से सत्ता की स्थापना का आहवान नहीं है। सच्चा जिहाद उत्पीड़न, अन्याय और अत्याचार से लड़ाई है। यह कई रूपों में किया जा सकता है – शिक्षा, दान, शांतिपूर्ण प्रतिरोध, या किसी के समुदाय को आक्रामकता से बचाने के माध्यम से। यह कभी भी ऐसे समूह में शामिल होने के बारे में नहीं है जो धार्मिक कर्तव्य की आड़ में हिंसा और अराजकता को बढ़ावा देता है।

किसी भी संघर्ष में शामिल होने पर विचार करने वाले मुस्लिम युवाओं के लिए, उन परिस्थितियों को समझना महत्वपूर्ण है, जिनके तहत अल्लाह जिहाद के लिए लड़ने की अनुमति देता है। इस्लाम में वैध आत्मरक्षा और युद्ध के बारे में स्पष्ट दिशानिर्देश हैं, जिसमें मुख्य रूप से वैध अधिकार, उचित कारण, निर्दोषों की सुरक्षा, शांतिपूर्ण समाधान और परामर्श/आम सहमति शामिल है। केवल एक न्यायपूर्ण और सक्षम शासक के नेतृत्व वाले वैध इस्लामी राज्य को ही मुस्लिम समुदाय की रक्षा में युद्ध की घोषणा करने का अधिकार है। इसका मतलब यह है कि कोई भी व्यक्ति या समूह किसी मान्यता प्राप्त इस्लामी सरकार की मंजूरी के बिना इस्लाम की ओर से एकतरफा युद्ध की घोषणा नहीं कर सकता है। खिलाफत की अवधारणा को स्व – घोषित समूहों द्वारा अधार्मिक बल के माध्यम से लागू नहीं किया जा सकता है। यह एक वास्तविक, वैध राज्य से आना चाहिए जो इस्लाम के सिद्धांतों को कायम रखता है। इसी तरह, इस्लाम में जिहाद की अनुमति केवल उत्पीड़न, अत्याचार या आक्रामकता से बचाव के लिए है यह व्यक्तिगत लाभ या राजनीतिक शक्ति के लिए हिंसा शुरू करने का बहाना नहीं है। न्याय, दया और मानवीय गरिमा के सिद्धांतों को हमेशा बनाए रखा जाना चाहिए।

यह कहने की आवश्यकता नहीं है कि इस्लाम निर्दोष नागरिकों, महिलाओं, बच्चों आदि को निशाना बनाने की सख्त मनाही करता है। जिहाद की आड़ में निर्दोष लोगों की जान को नुकसान पहुंचाने वाली कोई भी कारवाई इस्लाम की शिक्षाओं के खिलाफ है। यदि सचमुच में कोई समस्या का समाधान चाहता है तो वैसे आतंकवाद में शामिल चरमपंथी समूहों को किसी भी प्रकार के युद्ध का सहारा लेने से पहले समाधान के प्रयासों को प्रोत्साहित करना चाहिए। शांतिपूर्ण संवाद और बातचीत के माध्यम से संघर्ष को समाप्त किया जा सकता है। शांति का रास्ता हमेशा पहले खोजा जाना चाहिए, इसके अलावा, युद्ध या महत्वपूर्ण राजनीतिक कार्यों के संबंध में निर्णय परामर्श के माध्यम से और व्यापक मुस्लिम समुदाय की सहमति से युद्ध को जितना हो सके रोका जाना चाहिए। यह सुनिश्चित करता है कि कारवाई समझदारी से हो रहा है और उम्माह के सर्वोत्तम हित के लिए किया जा रहा है।

सीरियाई संघर्ष और इसी तरह के संकटों को खिलाफत की स्थापना के रूप में पेश करने का कट्टरपंथी प्रयास बेहद भ्रामक है। जो युवा ऐसे आंदोलनों में अपने आप को शामिल करते हैं, अंततोगत्वा उन्हें निराशा हाथ लगती है। वे खुद एक फालतू के वैचारिक जाल में उलझ जाते हैं। यह उन्हें इस्लाम की विकृत अवधारणा की ओर ले जाता है। नाहक के हिंसा के लिए उन्हें प्रेड़ित करता है, जो अंततोगत्वा मानवता को विनाशकारी भ्रमर में फंसा देता है। इस्लाम का सच्चा मार्ग वह है जो शांति, न्याय और मानवता की भलाई को बढ़ावा देता है, न कि संवेदनहीन संघर्ष या सांप्रदायिक हिंसा को प्रोत्साहित करता है। मुस्लिम युवाओं को खुद को शिक्षित करने, जानकार विद्वानों से मार्गदर्शन लेने और इस्लाम की सच्ची शिक्षाओं को समझने की जरूरत है। इस्लाम ज्ञान प्राप्त करने, न्याय के लिए प्रयास करने और समाज में सकारात्मक योगदान देने को प्रोत्साहित करता है। इस्लाम में हिंसा या विनाश का कोई महिमामंडन नहीं है और उम्माह की एकता की रक्षा करना, शांति को बढ़ावा देना और सभी रूपों में चरमपंथ के खिलाफ खड़ा होना हर मुसलमान की जिम्मेदारी है। मुस्लिम युवाओं को याद रखना चाहिए कि सफलता का सच्चा रास्ता कुरान और सुन्नत की शिक्षाओं का पालन करने, न्याय और धार्मिकता की दिशा में काम करने और हर इंसान की गरिमा को बनाए रखने में निहित है। इस तरह, वे समाज में सकारात्मक योगदान दे सकते हैं, अपने विश्वास की रक्षा कर सकते हैं और उन लोगों द्वारा बिछाए गए खतरनाक जाल से दूर रह सकते हैं जो अपने चरमपंथी एजेंडे के लिए उनका शोषण करना चाहते हैं।

भारतीय चिन्तन, भारतीय विचार, भारतीय सोच, भारतीय दृष्टिकोण को लेकर चलनी चाहिए सरकारें की पैरवी करने वाले पहले शख्स थे अटल जी

– डॉ राजीव बिंदल –
भाजपा प्रदेश अध्यक्ष
हिमाचल

भारत रत्न श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी की 100वीं जन्म जंयती 25 दिसम्बर 2024 को प्रारम्भ होने जा रही है। यह एक ऐसा अवसर है जब हम देश के उस महान नेता को स्मरण करेंगे, जिसने आजाद भारत के अन्दर एक नया कीर्तिमान स्थापित किया। भारत आजादी के बाद केवल और केवल कांग्रेस पार्टी के नेतृत्व में था, क्योंकि 1947 से पहले आजादी का नेतृत्व श्रद्धेय मोहन दास कर्मचन्द गांधी के हाथ में था और कांग्रेस पार्टी अर्थात राजनीति दल न होकर आजादी का आन्दोलन था, परन्तु 1947 के बाद कांग्रेस का नेतृत्व स्वर्गीय जवाहर लाल नेहरू के हाथ में आया, उन्होनें आजादी की उस लड़ाई को अपने राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग करते हुए कांग्रेस पार्टी की सरकारों को निरन्तर बनाने में उसका उपयोग किया। अटल बिहारी जी पहले वो शख्स बने जिन्होंने भारतीय चिन्तन, भारतीय विचार, भारतीय सोच, भारतीय दृष्टिकोण को लेकर सरकारें चलनी चाहिए इस बात की पैरवी की। डा. श्यामा प्रसाद मुखर्जी जी और पं. दीनदयाल उपाध्याय जी के द्वारा खड़े किये गये भारतीय जनसंघ का नेतृत्व 1950 के दशक में अटल बिहारी वाजपेयी जी के हाथ में आया और 1957 में पहली बार लोक सभा में सांसद के रूप में पहुंचे और उनकी जो आभा थी, उनकी जो वाककला थी, उनकी जो भाषणकला थी, उनका जो कवि हृदय था, उसने पूरे देश को बरबस अपनी ओर आकर्षित किया। जब तक अटल जी जीवित रहे सक्रिय राजनीति में रहे, चाहे किसी भी पार्टी से सम्बन्ध रखने वाला व्यक्ति हो, वा सामान्य समाज के व्यक्ति हो, वो अटल जी को सुनने के लिए ललायित रहता था। जगह – जगह उनके कार्यक्रमों में बड़ी संख्या में ऐसे लोग भाग लेते थे जो भारतीय जनसंघ और भारतीय जनता पार्टी के साथ अपना नाता नहीं रखते थे, अपितु विरोध भी रहते थे, वे भी अटल जी को सुनते थे। उनकी गुणवता के कारण ही विपक्ष का नेता रहते हुए उन्होंने भारत का प्रतिनिधित्व यू.एन.ओ. के अन्दर किया। भारतीय भाषा अर्थात हिन्दी के प्रति उनका जो स्नेह, लगाव और भारत का विकास भारतीय भाषाओं के माध्यम से ही होगा यह दृढ निश्चिय उनके मन में था। जिसके

कारण जब वह यू.एन.ओ. में गए, तो पहली बार भारत के किसी राजनेता ने, किसी अधिकारी ने विश्व पटल पर हिन्दी का उपयोग करते हुए अपनी बात को रखा। 1975 में जब श्रीमती इन्दिरा गांधी ने देश में आपात काल लगा दिया और हजारों लाखों लोगों को काल कोठरी के पीछे डाल दिया, उस समय में अटल जी, आडवाणी जी और भारतीय जनसंघ के सभी वरिष्ठ नेताओं को जेल में डाला गया। अटल जी ने उस समय देश का जेल में रहते हुए नेतृत्व किया और लोकतन्त्र जीवित रहना चाहिए इसके लिए अपना, अपनी पार्टी, अपना दल इसका विलय जनता पार्टी में स्वीकार किया, अनेक पार्टियों को मिलाकर जनता पार्टी बनी, 1977 में जो चुनाव हुआ उसमें पहली बार देश में गैर कांग्रेसी सरकार का गठन हुआ। मुरारजी भाई देसाई उसके प्रथम प्रधानमंत्री बने और विदेश मंत्री के रूप में श्रद्धेय अटल बिहारी वाजपेयी जी ने देश का नेतृत्व किया। ढ़ाई साल के अन्दर वैचारिक मतभेद होने पर वह पार्टी टूट गई और भारतीय जनसंघ, भारतीय जनता पार्टी में परिवर्तित हुआ। इस प्रकार 6 अप्रैल 1980 को भारतीय जनता पार्टी का उदय हुआ और अटल बिहारी वाजपेयी जी उसके पहले राष्ट्रीय अध्यक्ष बने।

उनके नेतृत्व में और अटल अडवाणी की जोड़ी ने इस पार्टी को तेज गति से बढ़ाना शुरू किया। कांग्रेस पार्टी के तत्कालिक नेता भारतीय जनता पार्टी के ऊपर हँसा करते थे, खिल्ली उड़ाया करते थे कि दो सांसदों वाली राष्ट्रीय पार्टी भारतीय जनता पार्टी है, परन्तु अटल जी, आडवाणी जी की जोड़ी ने इसको 1996 तक लगभग 200 सीटों तक पहुँचाकर, पहली बार प्रधानमंत्री की कुर्सी को माननीय अटल जी ने शोभायमान किया और किस प्रकार का व्यक्तित्व है, किस प्रकार का चरित्र वो रहा, यह अनुमान सहज में लगाया जा सकता है। जब एक वोट की कमी से Floor Of The House पर अटल जी की सरकार गिर जाती है। तो वह और तोड़फोड़ नहीं करते, वो कोई व्यापार नहीं करते वो Horse Trading नहीं करते और वस्तुस्थिति पूरे देश के सामने रखते हुए अपना त्यागपत्र दे देते हैं। पुन: 1997 – 98 में देश के प्रधानमंत्री के रूप में शपथ लेने के बाद भारत को आणविक शक्ति बनाने का काम यदि किसी व्यक्ति ने किया तो उसका नाम अटल विहारी वाजपेयी है। 11 मई 1998 में पोखरण में एक के बाद एक तीन विस्फोट करने के बाद भारत का आणविक परीक्षण पूरा हुआ। दुनिया ने भारत के ऊपर प्रतिबन्ध लगाए भारत के ऊपर दबाव डाला गया कि भारत आणविक शक्ति नहीं बनेगा। अटल जी ने पूरी हिम्मत के साथ दुनियां के इन प्रतिबन्धों का मुकाबला किया और कहा भारत शक्तिशाली बनेगा और बनकर रहेगा। भारत आणविक शक्ति बना तो उसके पीछे श्रद्धेय अटल विहारी वाजपेयी जी है। वाजपेयी जी गांव के विकास के प्रति पूरी तरह सजग व चिन्तित थे। केन्द्र से मिलने वाली धनराशि राज्यों को और ग्रामीण सड़कों के विकास के लिए जाया करती थी, परन्तु राज्यों की आर्थिक स्थितियां अच्छी न होने के कारण राज्य उन सड़कों के पैसों को सड़कों पर न लगाकर अन्य मदों में प्रयोग किया करते थे। अटल जी ने इस बात को गम्भीरता से लेते हुए 'प्रधानमंत्रे ग्रामीण सड़क योजना' को जन्म दिया। यह योजना अर्थात एक सड़क बनेगी जो गांव को पूरी तरह से छुएगी और पक्की सड़क होगी, जिसका शतप्रतिशत व्यय केन्द्र की सरकार देगी और मैन्टिनेंस भी केन्द्र की सरकार करेगी। मुझे अच्छे से याद है पहले ही चरण में 64 हजार करोड़ रूपये सन 2000 में प्रधानमंत्री ग्रामीण सड़क योजना के लिए रखा गया। यह इतनी बड़ी राशि थी कि देश के ग्रामीण क्षेत्रों में सम्पर्क मार्गो का एक जाल बिछना शुरू हो गया और आज यदि हम देखें तो कोई भी राज्य ऐसा नहीं है जो इन सम्पर्क मार्गो का लाभ नहीं उठा रहा और यह ग्राम सड़क योजना सबसे अधिक पापुलर योजना बनी। इसी प्रकार अटल जी की सरकार में खाद्यान का उत्पादन बहुत बढ़ा और खाद्यान को गरीब तक पहुंचाने का काम शुरू हुआ। 2001 में अन्त्योदय अन्न योजना का प्रारम्भ अटल जी की सरकार में आदरणीय शान्ता कुमार जी द्वारा किया गया। ये अन्न योजना गरीबों के लिए कल्याणकारी योजना के रूप में खड़ी हुई। हम ऐसी अनेक अनेक योजनाओं का वर्णन कर सकते हैं, जो अटल जी ने मेरे देश के भाग्य को बदलने के लिए दी और इसका परिणाम हुआ कि देश निरन्तर गति से आगे बढ़ा। अटल जी स्वदेशी के प्रति पूरी तरह सजग थे, अटल जी भारतीय भाषाओं संस्कृत, भारतीय संस्कृति और भारत की जो सांस्कृतिक विरासत है उसको लेकर सदैव उसके प्रति सजग थे, यह एक ऐसा व्यक्तित्व आजादी के बाद के समय में भारत की राजनीति का जो विशिष्ट लेकर खड़ा हुआ वो अटल विहारी वाजपेयी जी थे हम उनके श्री चरणों में नमन करते हैं और उनको श्रद्धासुमन अर्पित करते हैं। कारगिल का युद्ध देश के लिए एक मिसाल बना, जब अटल जी स्वयं बॉडर पर पहुँचे और भारत के सैनिकों का मनोबल बढ़ाया । अमेरिका को दो टूक कहा कि जब तक एक भी पाकिस्तानी भारत की सीमा में है युद्ध बन्दी नहीं होगी और न ही कोई वार्ता।

सैनिकों को मिलने वाले सम्मान का स्वरूप बदला गया। सीमा पर अपना बलिदान देने वाले वीर जवानों की शहादत को सलाम किया जाने लगा।

ऐसे थे अटल जी जिन्होंने अपने कवि हृदय से कहा अटल चुनौती अखिल विश्व को भला बुरा चाहे जो माने, डटे हुए है राष्ट्र धर्म पर विपदाओं में सीना ताने।

मशरूम की अग्रणी खेती के लिए चंबा के किसान को दिल्ली में किया गया सम्मानित

शिमला। चंबा के एक प्रगतिशील किसान ने दिल्ली में आयोजित एक प्रतिष्ठित कृषि कार्यक्रम में सम्मानित होकर हिमाचल प्रदेश को गौरवान्वित किया है। ग्राम रोड़ी, डाकघर भद्रम, सरोल, जिला चंबा के निवासी लेख राज को मशरूम की खेती में उनकी असाधारण उपलब्धियों के लिए

सराहना मिली है, जो पहाड़ी इलाकों में टिकाऊ और नवीन कृषि पद्धतियों के लिए एक उदाहरण स्थापित कर रहे हैं। लेख राज ने चंबा में कृषि विज्ञान केंद्र (केवीके) द्वारा प्रदान किए गए समर्थन और मार्गदर्शन से प्रेरित होकर, सात साल पहले मशरूम (ढींगरी) की खेती में अपनी यात्रा शुरू की थी। प्रधान वैज्ञानिक और प्रमुख (सेवानिवृत्त) डॉ. राजीव रैना के नेतृत्व में केवीके टीम ने लेख राज को आधुनिक मशरूम खेती तकनीकों से परिचित कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। केवीके से डॉ. जया चौधरी और डॉ. सुशील धीमान जैसे विशेषज्ञों ने विशेष प्रशिक्षण सत्र आयोजित किए, जिससे उन्हें स्पॉन उत्पादन, सब्सट्रेट तैयारी और नियंत्रित पर्यावरणीय परिस्थितियों को बनाए रखने की बारीकियों को समझने में मदद मिली। केवीके की सहायता से, श्री लेख राज ने बटन और ऑयस्टर मशरूम की खेती के लिए उन्नत तरीकों को अपनाया, जिससे उनकी उपज की गुणवत्ता और उपज में काफी सुधार हुआ। पहले वह मक्का – गेहूं की खेती क्रम से सालाना 1.5 से 2 लाख रुपये कमाते थे, मशरूम की खेती अपनाने के बाद उन्हें सालाना 5 से 6 लाख की कमाई होने लगी। दिल्ली में सम्मान समारोह का आयोजन अखिल भारतीय प्रगतिशील किसान सम्मेलन द्वारा किया गया था, जिसका शीर्षक भारत प्रगतिशील किसान पुरस्कार 2024 था, जहां श्री लेख राज को आत्मनिर्भर खेती को बढ़ावा देने और अपने समुदाय के अन्य किसानों को सशक्त बनाने में उनके योगदान के लिए सम्मानित किया गया। पुरस्कार समारोह के दौरान, उन्हें 11,000 रूपये का नकद पुरस्कार, एक स्मृति चिन्ह और उत्कृष्टता का प्रमाण पत्र प्रदान किया गया। कार्यक्रम में रेखा शर्मा (राज्यसभा सांसद, हरियाणा), तरूण श्रीधर पूर्व आईएएस मुख्य सचिव, हिमाचल प्रदेश ने भाग लिया। अपने भाषण के दौरान, लेख राज ने केवीके टीम के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त करते हुए कहा, 'उनका मार्गदर्शन मेरी खेती यात्रा को बदलने में सहायक था। मैं अपनी सफलता का श्रेय मेरे जैसे किसानों का समर्थन करने के प्रति उनके समर्पण को देता हूं। डॉ. धरमिंदर कुमार केवीके चंबा के वरिष्ठ वैज्ञानिक और प्रमुख ने व्यक्तिगत रूप से उन्हें इस प्रतिष्ठित पुरस्कार के लिए चुना और राष्ट्रीय स्तर पर आगे विचार करने के लिए उनके नाम की सिफारिश की। अपनी व्यक्तिगत सफलता के अलावा, लेख राज ने केवीके के तत्वावधान में साथी किसानों के लिए एक सलाहकार की भूमिका निभाई है। उनकी कहानी इस बात का उदाहरण देती है कि कैसे किसानों और कृषि संस्थानों के बीच सहयोगात्मक प्रयास अपार संभावनाओं को उजागर कर सकते हैं और स्थायी आजीविका का निर्माण कर सकते हैं।

आठ माह में एचआरटीसी की आय में 63.47 करोड़ की वृद्धि

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने हिमाचल पथ परिवहन निगम (एचआरटीसी) की समीक्षा बैठक की अध्यक्षता करते हुए कहा कि राज्य सरकार निगम को आत्मनिर्भर एवं व्यवहार्य बनाने के लिए ठोस कदम उठा रही है। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के प्रयासों तथा निगम के कार्यबल की समर्पित सेवाओं के फलस्वरूप इस वर्ष के प्रथम आठ माह में निगम की आय में 63.47 करोड़ रुपये की वृद्धि दर्ज की गई है।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार निगम को हर महीने लगभग 60 करोड़ रुपये का अनुदान जारी कर रही है और पिछले दो वर्षों से निगम द्वारा कर्मचारियों और पेंशनरों को समय पर वेतन एवं पेंशन के भुगतान सुनिश्चित किए जा रहे हैं। हिमाचल में परिवहन के सीमित साधन हैं इस स्थिति में निगम राज्य की जीवन रेखा की तरह कार्य कर रहा है। प्रतिदिन निगम की बसों के माध्यम से लगभग पांच लाख लोग यात्रा करते हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि हिमाचल प्रदेश को 31 मार्च, 2026 तक देश का हरित ऊर्जा राज्य बनाने का लक्ष्य रखा गया है और इस लक्ष्य को हासिल करने के लिए वर्तमान राज्य सरकार एचआरटीसी को 'ग्रीन एचआरटीसी' में बदलने की दिशा में कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि निगम ग्रीन हिमाचल

की परिकल्पना को साकार करने और आने वाली पीढ़ियों के लिए राज्य के पर्यावरण को संरक्षित करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है। निगम की डीजल बसों के पूरे बेड़े को ई-बसों से परिवर्तित किया जा रहा है और राज्य सरकार एचआरटीसी को मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध है। राज्य सरकार ने इलेक्ट्रिक बसों की खरीद के लिए 327 करोड़ रुपये आवंटित किए हैं।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने यात्रियों को बेहतर परिवहन सुविधाएं प्रदान करने के लिए नए बस अड्डों के निर्माण के निर्देश भी दिए। उन्होंने कहा कि एचआरटीसी ने अपनी बसों में कैशलेस भुगतान विकल्प भी शुरू किया है, हिमाचल प्रदेश परिवहन क्षेत्र में ऐसी सुविधाएं प्रदान करने वाला पहला राज्य बन गया है।

उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार के प्रयासों से एचआरटीसी की बसें यात्रियों के लिए आरामदायक सफर और विश्वास का पर्याय बन गई हैं। उन्होंने कहा कि एचआरटीसी की असली ताकत इसके कर्मचारियों की निपुण कार्यशैली और समर्पण भाव में निहित है, जो दिन-रात अपने कर्तव्यों का पालन करते हैं।

ऊना में आलू प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करेगी राज्य सरकार:मुख्यमंत्री

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार ऊना जिले में लगभग 20 करोड़ रुपये की लागत से आलू प्रसंस्करण संयंत्र स्थापित करने की योजना बना रही है। संयंत्र की न्यूनतम प्रसंस्करण क्षमता 500 किलोग्राम प्रति घंटा होगी और यह मुख्य रूप से फ्लेक्स के उत्पादन पर केंद्रित होगा। कृषि विभाग को इस संबंध में विस्तृत परियोजना रिपोर्ट (डीपीआर) तैयार करने के निर्देश दिए गए हैं। उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश के सकल राज्य घरेलू उत्पाद में कृषि का योगदान 14 प्रतिशत है, जिसमें आलू एक प्रमुख फसल है। राज्य के कुल सब्जी उत्पादन में आलू का योगदान लगभग 20 प्रतिशत है। प्रदेश में 16,960 हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 2,38,317 मीट्रिक टन आलू का उत्पादन होता है। उन्होंने कहा कि आलू प्रसंस्करण संयंत्र की स्थापना से किसानों को बेहतर पारिश्रमिक मूल्य सुनिश्चित करने में मदद मिलेगी। उद्योग और कृषि क्षेत्र दोनों में रोजगार के अवसर सृजित कर स्थानीय अर्थव्यवस्था को बढ़ावा मिलेगा।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि आलू को फ्लेक्स जैसे मूल्यवर्धित उत्पादों में संसाधित करके यह संयंत्र आलू के बाजार को स्थिर करने में मदद करेगा। इससे किसानों को ताजा आलू के बाजार में मूल्य के उतार-चढ़ाव की चिंता से भी निजात मिलेगी। आलू के फ्लेक्स इन्हें पकाने, मसलने और सुखाने से बनाए जाते हैं, जिससे बेहतरीन उत्पाद तैयार होता है, जिन्हें फिर बिक्री के लिए पैक किया जाता है।

मुख्यमंत्री ने कहा कि आलू प्रसंस्करण उद्योग एक अत्यधिक औद्योगिक, तकनीकी रूप से उन्नत और बाजार संचालित क्षेत्र है। उन्होंने कहा कि ऊना जिला में शरद और वसंत दोनों ऋतुओं में 3,400 हेक्टेयर क्षेत्र में लगभग 54,200 मीट्रिक टन आलू का उत्पादन होता है, इसलिए यहां इस संयंत्र की स्थापना नितांत ही व्यवहारिक है। इसके अतिरिक्त, पड़ोसी राज्य पंजाब में भी आलू की काफी मात्रा में पैदावार होती है, जिससे प्रसंस्करण उद्योग के लिए कच्चे माल की निरंतर आपूर्ति सुनिश्चित होगी।

उन्होंने कहा कि हिमाचल प्रदेश में आलू की खेती का एक प्रमुख लाभ, रबी सीजन के दौरान आलू की फसल तैयार होने की क्षमता है, जो आमतौर पर मार्च में होता है। हालांकि, बाजार की स्थितियों के कारण, किसानों को कई बार इस अवधि के दौरान चुनौतीपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ता है। इस प्रसंस्करण इकाई के स्थापित होने से किसानों को अपने आलू की फसल को बेहतर दामों पर बेचने का अवसर प्राप्त होगा, जिससे कीमतों में उतार-चढ़ाव को रोका जा सकेगा और आलू की वर्ष भर मांग सुनिश्चित होगी।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि हिमाचल प्रदेश की जलवायु परिस्थितियां उच्च गुणवत्ता वाले और रोग मुक्त बीज आलू के उत्पादन के लिए आदर्श हैं, जिन्हें पूरे भारत में अत्यधिक महत्त्व दिया जाता है। उन्होंने कहा कि उपभोक्ता वरीयताओं में बदलाव और प्रसंस्करण उद्योग के विस्तार के कारण भारत में प्रसंस्कृतिक आलू उत्पादों, जैसे कि फ्लेक्स, की मांग तेजी से बढ़ रही है। हिमाचल प्रदेश में आलू प्रसंस्करण क्षेत्र के विकास से न केवल स्थानीय किसानों को मदद मिलेगी, बल्कि राज्य की कृषि अर्थव्यवस्था के समग्र विकास में भी योगदान सुनिश्चित होगा।

मुख्यमंत्री ने करूणामूलक आधार पर रोजगार के लिए व्यापक नीति तैयार करने के दिए निर्देश

शिमला/शैल। मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने करुणामूलक आधार पर रोजगार के लिए एक वृहद नीति तैयार करने के निर्देश दिए हैं। उन्होंने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार

सभी लंबित मामलों को एक ही बार में निपटाने के लिए तत्परता से कार्य कर रही है। यहां आयोजित उच्च स्तरीय बैठक में नीति की समीक्षा करते हुए मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को करुणामूलक आधार पर रोजगार के लिए आवेदकों का विभाग, आयु तथा शैक्षणिक योग्यता अनुसार डाटा संकलित कर प्रस्तुत करने के निर्देश दिए।

मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को 10 जनवरी, 2025 को आयोजित होने वाली आगामी बैठक में अपेक्षित डाटा प्रस्तुत करने के निर्देश दिए। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार सेवा के दौरान अपने परिवार के सदस्यों को खोने वाले व्यक्तियों को सरकारी क्षेत्र में रोजगार प्रदान करने के लिए उदार तथा सहानुभूतिपूर्ण दृष्टिकोण अपना रही है। राज्य सरकार अधिक से अधिक आवेदकों को लाभान्वित करने के लिए सभी पहलुओं को ध्यान में रखेगी। उन्होंने कहा कि राज्य सरकार करुणामूलक आधार पर रोजगार प्रदान करने में विधवाओं तथा अनाथों को वरीयता देकर आश्रितों के कल्याण के लिए प्रतिबद्ध है।

ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू ने कहा कि राज्य सरकार ने अनुकंपा नियुक्तियों के मामलों के गहन अध्ययन के लिए शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर की अध्यक्षता में मंत्रिमंडलीय उप-समिति का गठन किया है। तकनीकी शिक्षा मंत्री राजेश धर्माणी और आयुष मंत्री यादविन्द्र गोमा इस उप-समिति के सदस्य हैं।

बैठक में उप-मुख्यमंत्री मुकेश अग्निहोत्री, शिक्षा मंत्री रोहित ठाकुर, प्रधान सचिव वित्त देवेश कुमार, सचिव डॉ. अभिषेक जैन व राकेश कंवर, विशेष सचिव वित्त रोहित जम्वाल और अन्य वरिष्ठ अधिकारी उपस्थित थे।

दुग्ध उत्पादकों का मासिक भुगतान 8.70 करोड़ रुपये से बढ़कर 25.62 करोड़ रुपये हुआ

शिमला/शैल। ग्रामीण अर्थव्यवस्था के सुदृढ़ीकरण के लिए वर्तमान राज्य सरकार के प्रयासों के सकारात्मक परिणाम सामने आ रहे हैं। दूध की खरीद मूल्य में ऐतिहासिक वृद्धि के परिणामस्वरूप सरकार द्वारा की जा रही दूध की खरीद में लगातार वृद्धि दर्ज की जा रही है। मिल्कफेड अब प्रतिदिन दो लाख लीटर दूध की खरीद कर रहा है और दूध उत्पादकों के मासिक भुगतान को 8.70 करोड़ रुपये से बढ़ाकर 25.62 करोड़ रुपये कर दिया गया है, जिससे दूध उत्पादकों को प्रत्यक्ष वित्तीय लाभ मिल रहे हैं।

मुख्यमंत्री ने कहा कि वर्तमान राज्य सरकार ने दूध आधारित अर्थव्यवस्था को मजबूत करने के लिए अनेक कदम उठाए हैं। प्रदेश सरकार गाय का दूध 45 रुपये प्रति लीटर और भैंस का दूध 55 रुपये प्रति लीटर की खरीद रही है। हिमाचल की 90 प्रतिशत आबादी ग्रामीण क्षेत्रों में रहती है। प्रदेश सरकार गांवों के लोगों को सुदृढ़ करने के उद्देश्य से पैसा सीधे ग्रामीणों तक पहुंचाना सुनिश्चित कर रही है ताकि वह आर्थिक रूप से मजबूत हों। सरकार भविष्य में भी इस दिशा में महत्त्वपूर्ण निर्णय लेती रहेगी।

उन्होंने कहा कि दूध की खरीद में पारदर्शिता लाने की दृष्टि से मिल्कफेड के माध्यम से राज्य भर में 455 स्वचालित दूध संग्रहण केंद्र स्थापित किए गए हैं। मिल्कफेड द्वारा राज्य के दुर्गम क्षेत्रों से किसानों के घर-द्वार से सीधे दूध एकत्रित कर उन्हें लाभान्वित किया जा रहा है, जिसके फलस्वरूप उनकी सामाजिक और आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है। इसके अतिरिक्त मिल्कफेड किसानों को 5 लीटर क्षमता वाले डिब्बे भी उपलब्ध करवा रहा है।

प्रदेश सरकार के किसानों की आय में बढ़ौतरी करने के उद्देश्य से मिल्कफेड द्वारा 11 जिलों में डेयरी विकास कार्यक्रम भी क्रियान्वित किए जा रहे हैं, जिसके तहत 1148 ग्रामीण डेयरी सहकारी समितियां बनाई गई हैं तथा इसके अंतर्गत 47,905 सदस्यों को पंजीकृत किया गया है। इन पहलों का उद्देश्य ग्रामीण समुदाय के लोगों को आजीविका के साधन उपलब्ध करवाना और राज्य की डेयरी अर्थव्यवस्था को मजबूत करना है। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार ने इस वित्त वर्ष से 500 करोड़ रुपये की हिम गंगा योजना भी शुरू की है। राज्य सरकार ने शिमला जिला के दत्तनगर में 25 करोड़ रुपये की लागत से 50,000 लीटर प्रतिदिन क्षमता का नया दूध प्रसंस्करण संयंत्र भी स्थापित किया है। इसके साथ वर्तमान राज्य सरकार कांगड़ा जिले के ढगवार में 1.50 लाख लीटर प्रतिदिन की क्षमता वाला एक नया प्रसंस्करण संयंत्र भी स्थापित किया जा रहा है। उन्होंने कहा कि सरकार के यह प्रयास पशु पालकों को दूध के लिए लाभकारी मूल्य दिलाने में मील पत्थर साबित होंगे।

लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने बाधित सड़कों को अतिशीघ्र बहाल करने के दिए निर्देश

शिमला/शैल। लोक निर्माण मंत्री विक्रमादित्य सिंह ने मीडिया को संबोधित करते हुए कहा कि 23 दिसम्बर, 2024 को हुई बर्फबारी के कारण प्रदेश में लगभग 350 सड़कें

अवरूद्ध हो गई थी। इन सड़कों की बहाली के लिए लोक निर्माण विभाग द्वारा 70 जेसीबी, 13 रोबो, 13 बुल्डोज़र, 76 टिप्पर व 96 अन्य मशीनों सहित कुल 268 मशीनें विभिन्न स्थानों पर तैनात की गई हैं। लोक निर्माण विभाग द्वारा यह सुनिश्चित किया जा रहा है कि सभी आवश्यक संसाधनों का उपयोग करके जल्द से जल्द सड़कों को बहाल किया जाए। उन्होंने कहा कि 235 सड़कें खोल दी गई हैं और 25 दिसम्बर तक 80 से 85 सड़कें खोल दी जाएंगी। शेष बची हुई सड़कें यातायात के लिए आगामी 2-3 दिनों में बहाल कर दी जाएंगी।

उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री ठाकुर सुखविंद्र सिंह सुक्खू हिमाचल प्रदेश को पर्यटन की दृष्टि से एक बेहतर राज्य बनाने की दिशा में प्रयासरत हैं। हाल में हुई बर्फबारी के बाद देश-विदेश से हजारों की संख्या में पर्यटक प्रदेश में भ्रमण के लिए आ रहे हैं। बर्फबारी के कारण उन्हें किसी भी प्रकार की असुविधा न हो इसके लिए लोक निर्माण विभाग पूरी तत्परता से कार्य कर रहा है।

लोक निर्माण मंत्री ने कहा कि उन्होंने विभाग के अधिकारियों के साथ वर्चुअल माध्यम से बैठक की और उन्हें सड़कों की बहाली व मरम्मत कार्य में तेजी लाने और आगामी दिनों तक पूरी तरह से मुस्तैद रहने के निर्देश दिए गए हैं।

विक्रमादित्य सिंह ने कहा कि केंद्रीय सड़क निधि (सीआरएफ) के तहत विभिन्न कार्यों के लिए वित्तीय वर्ष 2024-25 के 110 करोड़ रुपये आवंटित किए गए थे। इन सभी कार्यों को पूर्ण करने के लिए अतिरिक्त 50 करोड़ रुपये की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि इसके दृष्टिगत वह केंद्रीय सड़क एवं परिवहन मंत्री से आग्रह करेंगे ताकि इन कार्यों को पूर्ण करने में किसी भी प्रकार की बाधा उत्पन्न न हो।

केंद्र द्वारा एनएचएम के तहत भुगतान करने के बाद भी सरकार नहीं दे रही है दवा सप्लायरों को पैसा:जयराम ठाकुर

शिमला/शैल। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने कहा कि सरकार हर तरह से व्यवस्था पतन पर उतारू है। सरकार जिस रवैये पर चल रही है उससे बहुत जल्दी जानलेवा और गंभीर बीमारियों से जूझ रहे लोगों के इलाज पर संकट आ सकता है, जिससे

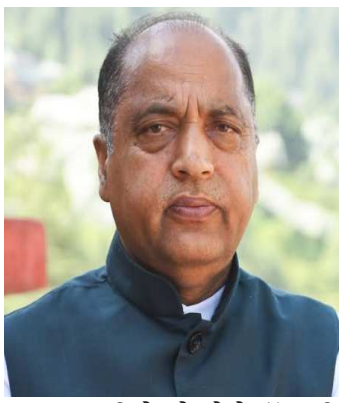

इलाजरत मरीजों के प्रोटोकॉल की दवाएं भी उन्हें समय से नहीं मिल पाएगी। जिसकी पूरी जिम्मेदारी सरकार की होगी। एनएचएम और अन्य सरकारी योजनाओं के तहत नि:शुल्क दी जा रही दवाओं की आपूर्ति भी अब संकट में है क्योंकि केंद्र सरकार द्वारा पैसा दिए जाने के बाद भी सुक्खू सरकार द्वारा दवा सप्लायरों को भुगतान नहीं किया जा रहा है। ऐसे में दवा सप्लायर अब एसेंशियल ड्रग लिस्ट में आने वाली दवाओं की सप्लाई 31 दिसंबर से रोकने की बात कर रहे हैं। अगर दवा सप्लाई रुकी तो अस्पताल पहुंचने वाले लोगों पर आफत आनी तय है। सरकार ने हिम केयर और आयुष्मान का बजट भी रोक रखा है जिसकी वजह से हार्ट के ऑपरेशन भी रोके जा रहे हैं। केंद्र सरकार द्वारा दिए जा रहे बजट को भी राज्य सरकार क्यों खर्च नहीं कर रही है यह समझ से परे है।

जयराम ठाकुर ने कहा कि प्रदेश सरकार की निष्क्रियता और नाकामी की वजह से लोगों की स्वास्थ्य पर बन आयी है। प्रदेश के हर अस्पताल से लेकर मेडिकल कॉलेज तक की व्यवस्था पूरी तरह चरमरा गई है। लोगों को न समय से दवाइयां मिल रही हैं और न ही इलाज। अखबारों में छोटे या बड़े ऑपरेशन हर दिन टाले जाने की खबरें छपती है। इसके बावजूद भी सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ रहा है। वर्तमान हालात और भी खराब है। सरकार द्वारा ड्रग सप्लायरों की समस्या को न सुनने और सुलझाने से हालात और खराब होंगे। अस्पतालों में आपातकाल के समय में इस्तेमाल होने वाली दवाइयां और इंजेक्शन की सप्लाई रुकने से लोगों के जान पर बन आएगी। पूर्व में हमारी सरकार ने लोगों की जान बचाने के लिए महंगे से महंगे इंजेक्शन लोगों को फ्री में उपलब्ध करवाए। चाहे हार्ट अटैक के समय इस्तेमाल होने वाले इंजेक्शन हो, किसी भी क्रॉनिक और जानलेवा बीमारी में इस्तेमाल होने वाली दवाइयां और इंजेक्शन, जरूरतमंद प्रदेशवासियों को नि:शुल्क लगाया गया। प्रदेशवासियों के इलाज के लिए चाहे पांच हजार का इंजेक्शन लगाना पड़ा या पचास हजार का हमारी सरकार ने लगवाये थे। नौ लाख रुपए का ब्रेस्ट कैंसर के ट्रीटमेंट पैकेज का खर्च भी हमारी सरकार ने उठाया था। आयुष्मान और हिम केयर से लाखों लोगों को पांच लाख का नि:शुल्क इलाज मिल रहा था। लेकिन वर्तमान सरकार की उदासीनता की वजह से अब जिन लोगों का इलाज चल रहा है उनके इलाज पर भी संकट आने वाला है।

नेता प्रतिपक्ष ने कहा कि यह कोई पहली बार नहीं है जब प्रदेश में स्वास्थ्य सुविधाएं ठप्प हुई हो। पहले भी कभी अस्पतालों में जांच सुविधाएं ठप्प हो गई थी तो कभी अस्पताल में डॉयलिसिस सेवाएं रोक दी जाती है। आये दिन बड़े से बड़ा और छोटा से छोटा ऑपरेशन टालने की खबरें आती रहती हैं। सामान्य से सामान्य दवाएं भी लोगों को नहीं मिल रही हैं। इन सबका कारण है सरकार द्वारा पेमेंट रोकना। इससे प्रदेश के लोगों को ही परेशानी होती है, सरकार को कोई फर्क नहीं पड़ता। इस बार भी केंद्र सरकार द्वारा पैसे देने के बाद भी दवाओं का पैसा सुक्खू सरकार द्वारा रोका गया है। ड्रग सप्लायर बार-बार सरकार में जिम्मेदार लोगों को पत्र लिख-लिख कर, मुलाकात कर-करके भुगतान करने की फरियाद कर रहे हैं। लेकिन सरकार की तरफ से कोई प्रभावी कदम नहीं उठाए जा रहे हैं। प्रदेश के लोगों के स्वास्थ्य के साथ इस तरह से खिलवाड़ नहीं किया जा सकता है।

भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष ने पूर्व प्रधानमंत्री डॉ.मनमोहन सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित की

शिमला/शैल। भाजपा राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं केंद्रीय मंत्री जगत प्रकाश

नड्डा ने कहा पूर्व प्रधानमंत्री और अर्थशास्त्री श्री मनमोहन सिंह जी का निधन राष्ट्र के लिए बहुत बड़ी क्षति है। वे एक दूरदर्शी राजनेता और भारतीय राजनीति के दिग्गज थे, उन्होंने सार्वजनिक सेवा में अपने उल्लेखनीय करियर के दौरान लगातार दलितों के कल्याण के लिए आवाज़ उठाई। उनके नेतृत्व ने पार्टी लाइनों से परे प्रशंसा और सम्मान अर्जित किया। श्री मनमोहन सिंह जी की विरासत राष्ट्र निर्माण के प्रयासों में पीढ़ियों को प्रेरित करती रहेगी। उनके परिवार, दोस्तों और प्रशंसकों के प्रति मेरी संवेदनाएँ, ओम शांति। राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा ने पूर्व प्रधानमंत्री और प्रख्यात अर्थशास्त्री डॉ. मनमोहन सिंह जी को श्रद्धांजलि अर्पित की। यह पूरे देश के लिए गहरे दुख का क्षण है क्योंकि हम एक ऐसे नेता के निधन पर शोक व्यक्त करते हैं जिनकी विनम्रता, गर्मजोशी और शालीनता ने अनगिनत लोगों के जीवन को छुआ। उनके निधन से राजनीतिक और आर्थिक क्षेत्र में एक अपूरणीय शून्यता पैदा हो गई है।

जलोड़ी सुरंग की अलाइनमेंट स्वीकृति के लिए केंद्रीय नेतृत्व का आभार:जयराम

शिमला/शैल। नेता प्रतिपक्ष जयराम ठाकुर ने जलोड़ी सुरंग बनाने के लिए केंद्रीय सड़क परिवहन मंत्रालय द्वारा अलाइनमेंट की स्वीकृति देने का स्वागत किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, गृह मंत्री अमित शाह, सड़क परिवहन मंत्री नितिन गडकरी और भाजपा के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं स्वास्थ्य मंत्री जगत प्रकाश नड्डा का आभार जताया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व वाली केंद्र सरकार देवभूमि हिमाचल की हर अपेक्षा को प्राथमिकता से पूरा कर रही है। इसी कड़ी में मोदी सरकार ने अपना वायदा निभाते हुए जलोड़ी सुरंग बनाने के दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया है।

केंद्रीय सड़क परिवहन और राजमार्ग मंत्री नितिन गडकरी ने जलोड़ी जोत टनल की घोषणा की थी, जिसके निर्माण की दिशा में महत्वपूर्ण कदम उठाया गया हैं। हिमाचल प्रदेश का विकास भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की गारंटी है, जो वादा भाजपा ने किया था उसे निर्धारित समय के अंदर पूरा करने का काम शुरू हो गया है।

विंटर कार्निवल के मंच को तुरंत रिज वाटर टैंक के 'पीले निशानों' से दूर स्थानांतरित किया जाये:पूर्व उप-महापौर

शिमला/शैल। पूर्व उप-महापौर टिकेन्द्र सिंह पंवार ने हिमाचल प्रदेश के मुख्य सचिव को पत्र लिखकर यह सुनिश्चित करने के लिए हस्तक्षेप करने

की मांग है कि रिज वाटर टैंक पर कोई सार्वजनिक समारोह आयोजित न किया जाये। यह पत्र रिज पर चल रहे 'विंटर कार्निवल' को लेकर लिखा गया है, जिसके लिए रिज टैंक पर ही एक मंच बनाया गया है। उन्होने शिमला नगर निगम की विंटर कार्निवल पहल का स्वागत किया और कहा कि इस आयोजन के लिये आपदा तत्व को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। रिज शिमला में स्थितयह वाटर टैंक 140 साल से भी ज्यादा पुराना हो चुका है। इस टैंक की कुल भंडारण क्षमता 10 लाख गैलन पानी है। इस टैंक के रखरखाव की एक मानक प्रक्रिया है। इसी कारण से रिज वाटर टैंक पर किसी भी गतिविधि की अनुमति नहीं है । इस पत्र में एचवीआरए रिपोर्ट का भी उल्लेख किया गया है। उन्होने विंटर कार्निवल का आयोजन एक स्वागत योग्य कदम है, एक बार फिर इसे रिज वाटर टैंक पर ही एक स्टेज बनाकर आयोजित किया जा रहा है। हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय ने पिछले निर्णयों में आदेश दिया है कि वहां कोई भी ऐसी गतिविधि नहीं होनी चाहिए जो जोखिम को बढ़ाती हो। 2007 में एक सरकारी आदेश भी है जिसमें स्पष्ट रूप से जोर दिया गया है कि 100 मीटर के भीतर कोई भी गतिविधि, जैसे बिक्री की अनुमति देना या वाणिज्यिक उद्देश्यों के लिए रिज का उपयोग करने की अनुमति नहीं दी जानी चाहिए।

इन सबके बावजूद, और विभिन्न हस्तक्षेपों के बावजूद, कानून या आपदा जोखिम न्यूनीकरण के मूल सिद्धांतों के प्रति पूरी तरह से अवमानना के साथ समारोह आयोजित किये जा रहे हैं। इस पत्र में जिला प्रशासन द्वारा मांगी गई अनुमति पर भी प्रकाश डाला गया है। इसमें कहा गया है, 'मैं आपको यह भी बताना चाहता हूं कि मौजूदा शीतकालीन कार्निवल के लिए शिमला के उपायुक्त ने आश्चर्यजनक रूप से एसजेपीएनएल से रिज टैंक के लिए संरचनात्मक प्रमाण पत्र की अनुमति मांगी थी। न तो उक्त कंपनी द्वारा ऐसा प्रमाण पत्र जारी किया जा सकता है और न ही दिया गया। इसलिये इसे कानूनी मंजूरी के बिना चलाया जा रहा है।

उन्होने मुख्य सचिव से आग्रह किया है कि वे सुनिश्चित करें कि हिमाचल प्रदेश उच्च न्यायालय के आदेशों और 2007 के सरकारी आदेशों में स्पष्ट है कि रिज पर गतिविधियों की पूर्ण रोक लगाई जाये।

यह उल्लेख करने की आवश्यकता नहीं है कि ये देश के तीन कानूनों- हेरिटेज एक्ट, वैली व्यू एक्ट, और स्ट्रीट वेंडर्स एक्ट के भी विपरीत हैं।

मुख्य सचिव को यह भी चेतावनी दी गई है कि यदि सरकार के विभिन्न समूह सरकारी आदेशों का उल्लंघन करना जारी रखते हैं, तो हम उनके खिलाफ अवमानना याचिका दायर करने के लिए मजबूर होंगे। विंटर कार्निवल के मंच को तुरंत रिज वाटर टैंक के 'पीले निशानों' से दूर स्थानांतरित किया जाना चाहिए।

जंगल कटान जांच हेतु भाजपा की तीन सदस्यीय कमेटी गठित

शिमला/शैल। मण्डी जिला के धर्मपुर विधान सभा क्षेत्र के ग्राम पंचायत बहरी के अर्न्तगत गांव बहरी में अवैध रूप से बालन के लिए भारी मात्रा में जंगल का कटान हुआ है। भाजपा ने इस मामले को लेकर 24 दिसम्बर 2024 को लेकर सही तथ्य इक्टठा करने हेतु एक तीन सदस्यीय कमेटी गठित की गई है। भाजपा प्रदेश अध्यक्ष द्वारा लिखे गए पत्र के अनुसार इस कमेटी को मौके पर जाकर तथ्यों की सारी जानकारी प्राप्त करने के बाद 10 दिनों में अपनी रिपोर्ट भाजपा को सौंपनी है। पार्टी द्वारा इस समिति के अध्यक्ष सतपाल सिंह

सत्ती विधायक, समिति सदस्य सुखराम चौधरी विधायक एवं बलवीर सिंह वर्मा विधायक को बनाया गया था।

समिति के अध्यक्ष सतपाल सत्ती ने बताया कि यह समिति 29 दिसंबर को भाजपा धर्मपुर कार्यालय में प्रात: 10 बजे पहुंच जाएगी उसके उपरांत समिति के सभी सदस्य स्पष्ट पर जा कर पूरी वस्तु स्थिति का जायजा लेंगे। यह एक फैक्ट फाइंडिंग समिति भी है इसलिए हम जनता से आग्रह करते है कि कोई भी व्यक्ति इस प्रकरण से जुड़े किसी भी प्रकार का प्रमाण समिति को देना चाहे तो दे सकता है, यह समिति जनता से सीधा जुड़ने का काम करेगी। सत्ती ने बताया कि बालन के लिए जो पेड़ काटे गए हैं, जानकारी मिली है कि उसकी विधिवत अनुमति वन विभाग से प्राप्त नहीं की गई है। यह भी मालूम पड़ा है कि बालन के लिए जो लकड़ी काटी गई, उसमें वो पेड़ भी शामिल है जिनको काटना प्रतिबन्धित है। अभी हाल ही में सम्पन्न हुए विधान सभा सत्र के दौरान इस विषय को विपक्ष द्वारा उठाया गया था।

सम्पादक, प्रकाशक एवं मुद्रक श्री बलदेव शर्मा द्वारा ऋचा प्रिंटर्ज एण्ड पब्लिशर्ज़ रिवोली बस अड्डा लक्कड़ बाजार शिमला से प्रकाशित व मुद्रित दूरभाष: 0177-2805015, 94180-15015 फैक्स: 2805015

www.shailsamachar.com

भाजपा की नीयत और नीति पर उठते सवालों के बीच बढ़ा विश्वसनीयता का संकट

शिमला/शैल। हिमाचल वित्तीय संकट से गुजर रहा है और प्रदेश के हालात कभी भी श्रीलंका जैसे हो सकते हैं यह चेतावनी मुख्यमंत्री सुक्खू ने प्रदेश की सत्ता संभालते ही जारी कर

दी। प्रदेश के वित्तीय संकट के लिये जयराम सरकार के समय रहे कुप्रबंधन को दोषी ठहराया गया था। इसी कुप्रबंधन के नाम पर पिछली सरकार द्वारा अंतिम छः माह में लिये गये फैसलों के अमल पर रोक लगा दी गई। वित्तीय स्थिति पर श्वेत पत्र तक लाया गया और केंद्र पर भी प्रदेश के साथ भेदभाव बरतने के आरोप लगाये गये। प्रदेश की कर्ज लेने की सीमा में भारी कटौती कर दिये जाने के भी आरोप लगाये गये। स्वभाविक है कि जिस विपक्ष पर सत्ता संभालते ही सरकार द्वारा इस तरह के आरोप लगा दिये जायें उसके लिये भी स्थितियां बहुत संवेदनशील हो जाती हैं। क्योंकि उसे सरकार के आरोपों का जवाब देने के साथ ही सरकार के हर कामकाज पर पैनी नजर बनाये रखना आवश्यक हो जाता है। राजनीतिक के इस मानक पर विपक्ष का आकलन करना आवश्यक हो जाता है। लेकिन इस आकलन के लिये प्रदेश में रही भाजपा सरकारों की पृष्ठभूमि पर भी नजर डालना आवश्यक हो जाता है।

हिमाचल में भाजपा के तीन मुख्यमंत्री रहे हैं। पहले शान्ता कुमार दूसरे प्रेम कुमार धूमल और तीसरे जयराम ठाकुर। शान्ता पहली बार 1977 में जनता पार्टी के मुख्यमंत्री बने और 1980 में यह सरकार टूट गई तथा शान्ता कुमार कार्यकाल पूरा नहीं कर पाये। दूसरी बार 1990 में भाजपा सरकार के मुख्यमंत्री बने लेकिन बाबरी मस्जिद प्रकरण में यह सरकार भी 1992 में गिर गई और शान्ता कार्यकाल पूरा नहीं कर पाये। शान्त उसके बाद केंद्र में भी मंत्री बने। शान्ता के बाद प्रो.प्रेम कुमार धूमल 1998 में गठबंधन सरकार के मुख्यमंत्री बने और पूरा कार्यकाल रहे। उसके बाद 2007 में दूसरी बार मुख्यमंत्री बने तथा कार्यकाल पूरा किया। 2017 का चुनाव धूमल को नेता घोषित करके लड़ा गया। इस चुनाव में भाजपा तो जीत गई परन्तु धूमल चुनाव हार गये। तब जयराम ठाकुर मुख्यमंत्री बनाये गये। उस समय धूमल को मुख्यमंत्री बनाने के लिये कुछ विधायकों ने अपनी सीटें छोड़ने तक की पेशकश कर दी थी। जगत प्रकाश नड्डा भी उस समय मुख्यमंत्री के लिये प्रबल दावेदारों में थे। शान्ता धूमल और नड्डा के राजनीतिक कद जयराम ठाकुर से कहीं बड़े थे। लेकिन मुख्यमंत्री जयराम बन गये। जयराम और धूमल में सरकार बनने के बाद टकराव की भी स्थिति रही है। यही पृष्ठभूमि जयराम के मुख्यमंत्री काल में भी सक्रिय भूमिका में रही और आज नेता प्रतिपक्ष के दौर में भी है। इसलिए आज भाजपा का बतौर विपक्ष आकलन करने के लिये इस पृष्ठभूमि को भी गणना में रखना होगा।

हिमाचल में 2022 में भाजपा विधानसभा चुनाव हार गई। जबकि प्रधानमंत्री और गृह मंत्री भी सक्रिय प्रचार में रहे। नड्डा केंद्रीय राजनीति में बड़े मुकाम पर थे। अनुराग केंद्र में मंत्री थे। लेकिन यह सब होने के बावजूद हमीरपुर संसदीय क्षेत्र में भाजपा को बड़ी हार का सामना करना पड़ा। शान्ता के कांगड़ा में भी कोई ज्यादा सुखदः स्थिति नहीं रही। केवल मंडी की जीत ने भाजपा को संबल दिया। और इससे जयराम का नेता प्रतिपक्ष बनना आसान हो गया। वह विधायकी की शपथ से पहले ही नेता प्रतिपक्ष बन गये। उधर नई सरकार ने जिस तरह से वित्तीय संकट के लिये पूर्व सरकार को जिम्मेदार ठहराया और साथ ही व्यवस्था परिवर्तन के नाम पर प्रशासन में कोई फेरबदल नहीं किया और पिछले फैसला पलट दिये उससे प्रशासन के लिये फिर पूर्व नेतृत्व ही संबल रह गया। इसका व्यवहारिक परिणाम यह हुआ कि सरकार की हर अन्दर की सूचना पूर्व मुख्यमंत्री नेता प्रतिपक्ष तक आसानी से पहुंचना शुरू हो गई। सरकार द्वारा कर्ज

लेने का हर आंकड़ा बाहर आना शुरू हो गया। सरकार में सीपीएस की नियुक्तियों और राजेन्द्र राणा तथा सुधीर शर्मा का मंत्री परिषद से बाहर रहना कांग्रेस में असंतोष का बड़ा कारण बनता चला गया। कार्यकर्ताओं की अनदेखी की शिकायतें हाईकमान तक पहुंचना शुरू हो गई। लेकिन कांग्रेस हाईकमान स्थितियों का सही आकलन नहीं कर पायी और राज्यसभा चुनाव में यह असंतोष खुलकर सामने आ गया। कांग्रेस के छः विधायक भाजपा में चले गये। इन्हीं के साथ तीनों निर्दलीय विधायक भी भाजपा में शामिल हो गये।

इस दलबदल पर जिस तरह की पुलिस और अदालती कारवाईयां शुरू हुई उससे आरोपों प्रत्यारोपों का जो दौर शुरू हुआ वह ईडी और आयकर की छापेमारी से कुछ लोगों की गिरफ्तारी तक पहुंच गया। इस गिरफ्तारी का प्रसंग जिस तरह से विधानसभा पटल तक जब पहुंचा और मुख्यमंत्री को अपने जवाब में यह कहना पड़ गया कि ज्ञानचन्द विधानसभा में उनके समर्थक है तो लोकसभा में अनुराग ठाकुर का है। मुख्यमंत्री ने इसी प्रसंग में पूर्व विधायक रमेश ध्वाला और विजय अग्निहोत्री का जिक्र भी सदन में कर दिया। अब भाजपा में शामिल हुये कांग्रेस के छः विधायकों के पास हर समय ईडी और सीबीआई तथा आयकर तक पहुंचे मामलों को जल्द से जल्द अंतिम अंजाम तक पहुंचाने के लिये भाजपा नेतृत्व पर दबाव बनाना आवश्यक हो गया है। जब यह लोग भाजपा में शामिल हुये थे नड्डा तब भी राष्ट्रीय अध्यक्ष थे और आज भी हैं। इसलिए जिस तरह की परिस्थितियों स्वतः ही बनती जा रही है उनमें नड्डा और अनुराग को भी सरकार के खिलाफ राज्यपाल को सौंपे काले चिट्ठे पर आक्रामक होना ही पड़ेगा। क्योंकि भाजपा पर प्रदेश की सरकार को तोड़ने के आरोप लग ही चुके हैं और इन आरोपों की ज्यादा आंच नड्डा और अनुराग पर है। क्योंकि वह केंद्र में हैं। इस परिदृश्य में नड्डा और अनुराग यदि पूरा मुखर होकर सरकार के खिलाफ आक्रामक नहीं होते हैं तो इसके लिये उन्हीं पर आगे चलकर सवाल उठेंगे। क्योंकि इस समय सरकार के खिलाफ जितनी आक्रामकता जयराम अपनाये हुये हैं उतनी दूसरे नेता नहीं। यही आक्रामकता आने वाले दिनों में यह तय करेगी कि भाजपा का प्रदेश नेतृत्व किन हाथों में कितना सुरक्षित रहेगा। इसमें यह भी महत्वपूर्ण रहेगा कि संगठन के चुनाव में दल बदल कर आये नेताओं को क्या मिलता है क्योंकि भाजपा की विश्वसनीयता के लिये यह

आवश्यक होगा। क्योंकि भाजपा जिस तरह से राज्यपाल को सौंप काले चिट्ठे को विधानसभा में दस्तावेजों के साथ प्रमाणित नहीं कर पायी है उससे विपक्ष की नीयत और नीति दोनों सवालों के घेरे में आ गये हैं। दो वर्ष में सदन में सदस्यों का आंकड़ा 25 से 28 पहुंचने से असफल लोटस ऑपरेशन का आरोप कहीं बड़ा है।

दो वर्ष के बाद मुख्यमंत्री

.....पृष्ठ 1 का शेष

पार्टी छोड़कर भाजपा में शामिल हो गये राज्यसभा का चुनाव कांग्रेस हार गयी। इस हार के बाद जिस तरह का घटनाक्रम प्रदेश की राजनीति में घटा है उससे स्थितियां और गंभीर होती चली गयी है।

कांग्रेस से निकले छः विधायकों ने जिस तरह से मुख्यमंत्री को घेरा है उसका परिणाम हमीरपुर नादौन में ईडी और आयकर की छापेमारी तक पहुंच गया है। नादौन के दो लोग इसमें ईडी ने गिरफ्तार कर लिये है। कुछ और गिरफ्तारी की तलवार लटकी हुई है। गिरफ्तार हुये लोगों में से ज्ञानचंद चौधरी मुख्यमंत्री का निकटस्थ कहा गया। इस निकटस्थता पर इसी शीत सत्र में मुख्यमंत्री ने सदन में कहा कि ज्ञानचंद विधानसभा में तो उनका समर्थक है परन्तु लोकसभा में अनुराग ठाकुर का समर्थक है। अनुराग ने इस पर कोई प्रतिक्रिया जारी नहीं की है। लेकिन इस सत्र में जिस तरह से नादौन में एचआरटीसी के ई-बस स्टैंड के लिये 70 कनाल जमीन की खरीद बेच का मामला उठा है। उसके दस्तावेज जिस दिन सार्वजनिक रूप से सामने आ जाएंगे तब इस मामले में कई कठिनाइयां उठ खड़ी होगी यह तय है। इसी तरह भाजपा द्वारा राज्यपाल को सौंपे काले चिट्ठे में मुख्यमंत्री के नाम 770 कनाल जमीन होने का मामला सामने आया है। इस मामले का राजस्व रिकॉर्ड और अदालती फैसलों के दस्तावेज सार्वजनिक रूप से सामने आने पर बहुत लोगों को दिक्कतों का सामना करना पड़ेगा। इस वस्तुस्थिति में यदि सरकार और कांग्रेस पार्टी का आकलन किया जाये तो दोनों के लिये स्थितियां सुखदः नहीं है। लेकिन मुख्यमंत्री के लिये अपने स्तर पर भी स्थितियां सुखदः नहीं है। क्योंकि कांग्रेस से निकले हुये छः विधायकों के लिये मुख्यमंत्री के खिलाफ खोले मोर्चे को अन्तिम परिणाम तक पहुंचाना आवश्यक है। इन लोगों की लड़ाई में भाजपा के राष्ट्रीय नेतृत्व को अपनी विश्वसनीयता स्थापित करने के लिये इन लोगों का पूरा साथ देना राजनीतिक आवश्यकता बन चुका है।